अंक 7

वर्ष 2016

# टी.ई.सी.

# संचारिका

## वार्षिक गृह पत्रिका

भारत सरकार
दूरसंचार विभाग
दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र
खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली – 110001

www.tec.gov.in

# शुभारंभ

# हिंदी पखवाड़ा
## 2015

# संदेश

प्रिय पाठकों,

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र की गृह पत्रिका "टी.ई.सी. संचारिका" का सातवां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। यह एक तकनीकी कार्यालय है और वास्तव में मेरे लिए यह गौरव की बात है कि इस कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी तकनीकी कार्यों के साथ–साथ राजभाषा हिंदी में भी लेखन कार्य करते हुए हिंदी भाषा की सेवा कर रहे हैं ।

अनेकता में एकता, विषमता में समता, विभिन्नता में सहयोग भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता है । भारतीय संस्कृति विभिन्न प्रकार के लोगों को उनकी जातिगत विशेषता के साथ उन्हें अपने में आत्मसात कर लेती है । हमारे देश जैसे विशाल राष्ट्र के लिए, जिसमें अनेक जाति, धर्म और परंपरा को मानने वाले लोग बसते हैं और जहाँ अनेक प्रांतीय भाषाएं बोली और लिखी–पढ़ी जाती हैं, हमें एक ऐसी भाषा की जरूरत है जो सबको एक सूत्र में पिरोये और यह कार्य 'हिंदी' बखूबी कर रही है । इस प्रकार यह एक ऐसी भाषा है जो भारत की राष्ट्रीयता को अविकल रखते हुए पूरे देश की राष्ट्र भाषा बन सकती है ।

भाषा राष्ट्र की आत्मा होती है। किसी देश की संस्कृति उसकी भाषा से पहचानी जाती है । भाषा के माध्यम से सांस्कृतिक मूल्यों और परम्पराओं का उत्थान संभव है। हम सब का संवैधानिक कर्तव्य है कि सरकार की राजभाषा नीति के अंतर्गत अपने दैनिक कामकाज में राजभाषा हिंदी का प्रयोग करते हुए निरंतर इसका प्रचार–प्रसार करें ।

राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में गृह पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। इस पत्रिका के प्रकाशन का उद्देश्य अधिकारियों व कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को उजागर करना एवं राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाना है। "टी.ई.सी. संचारिका" में विभिन्न विषयों पर रचनाएं समाहित हैं। सभी लेखक बधाई के पात्र हैं तथा इनका लेखन कार्य अन्य लोगों का प्रेरणा पथ भी प्रशस्त करेगा ।

मुझे आशा है कि यह पत्रिका पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी और कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों में लेखन प्रतिभा बढ़ाएगी । आप अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएंगे ताकि पत्रिका के आगामी अंकों को और अधिक सार्थक रूप में प्रस्तुत किया जा सके।

**देबी प्रसाद डे**
कार्यालय प्रमुख एवं वरिष्ठ उप महानिदेशक
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

# संपादकीय

प्रिय साथियों,

"टी.ई.सी. संचारिका" का नवीन अंक अपने पाठकों के समक्ष रखते हुए मुझे अत्याधिक प्रसन्नता हो रही है ।

भारत एक बहुभाषी देश है। अपनी क्षेत्रीय/प्रांतीय भाषाओं का विकास करना भी हमारा दायित्व है। सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करते हुए हमें संघ की राजभाषा हिंदी के प्रयोग में भी निरंतर वृद्धि लानी है। हिंदी भाषा का सामर्थ्य, संप्रेषणीयता और सांस्कृतिक विरासत ऐसे गुण हैं जो भाषा को महिमामंडित करते है । हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पास हिंदी भाषा का समृद्ध साहित्य है और पिछले कुछ दशकों से साहित्य की अन्य विधाओं के साथ–साथ विज्ञान एवं तकनीक से जुड़े विषयों पर भी हिंदी में लेखन कार्य हो रहा है। यह बहुत आवश्यक भी है क्योंकि तकनीक एवं विज्ञान का लाभ अंततः सामान्य जन तक पहुँचाना है ।

इस संस्थान में तकनीकी कार्यों के अलावा राजभाषा के प्रचार–प्रसार के दायित्व का निर्वाह भी भली–भांति किया जा रहा है और संस्थान की गृह पत्रिका "टी.ई.सी. संचारिका" का प्रकाशन इसकी सबसे बड़ी मिसाल है। दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र और राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान के रचनाकारों के लेखन कार्य की बदौलत "टी.ई.सी. संचारिका" अपनी यात्रा के पथ पर अग्रसर है। हिंदी में लेखन कार्य की जो धारा बही है, वह अब आगे ही बढ़ेगी ।

मैं उन सभी रचनाकारों, पत्रिका के प्रकाशन में संरक्षक एवं मार्गदर्शक और सहयोगीगणों को बधाई देता हूँ जिनके प्रयास से पत्रिका का नया अंक अस्तित्व में आया ।

आशा है पूर्व अंकों की भांति "टी.ई.सी. संचारिका" का सातवां अंक भी आपको पसंद आएगा एवं इसके बारे में आपकी प्रतिक्रिया, विचारों और सुझावों की हमें अधीरता के साथ प्रतीक्षा रहेगी ।

**सुनील पुरोहित**
उप महानिदेशक (एन.जी.एस.)
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

**संरक्षक एवं मार्गदर्शक**
श्री देबी प्रसाद डे
कार्यालय प्रमुख एवं
वरिष्ठ उप महानिदेशक

**उप संरक्षक**
श्री बाल किशन
उप महानिदेशक (टी. एंड ए.)

**संपादक**
श्री सुनील पुरोहित
उप महानिदेशक (एन.जी.एस.)

**सह संपादक**
श्रीमती प्रीति बॉंझल
निदेशक (एन.जी.एस.)

**सहयोगी गण**
श्री संजीव नारंग
श्रीमती सुषमा चोपड़ा
श्री हर्ष शर्मा
श्री राजेश त्रिपाठी
श्री राजेन्द्र कुमार अग्रवाल
श्री अमरदीप

: नोट :
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं।

# विषय सूची


| क्रं.सं. | रचनाएँ | रचनाकार | पृष्ठ सं. |
|---|---|---|---|
| 1. | माँ सरस्वती वंदना | राजेश कुमार | 4 |
| 2. | स्वागत | | 5 |
| 3. | मुड़ें प्रकृति की ओर | राकेश मिश्रा | 6 |
| 4. | अकेला | अवधेश सिंह | 7 |
| 5. | जिंदगी क्या है | अवधेश सिंह | 7 |
| 6. | मोबाइल व सेल्फी | राजेन्द्र कुमार अग्रवाल | 8 |
| 7. | भावपूर्ण श्रद्धांजलि | | 10 |
| 8. | राधा | हर्ष शर्मा | 11 |
| 9. | नवरात्रि माँ दुर्गा | राजेश त्रिपाठी | 12 |
| 10. | अति कभी न करना इति हो जायेगी | ऊषा कुमारी | 15 |
| 11. | कहते हैं | ऊषा कुमारी | 15 |
| 12. | समान्तर ब्रह्माण्ड | अवधेश सिंह | 15 |
| 13. | बाँझ रह जाना अच्छा | अमर दीप | 16 |
| 14. | प्रेरणात्मक प्रसंग | अमर दीप | 16 |
| 15. | छब्बीस जनवरी का शुभ दिन | स्व. वाई पी चोपड़ा | 17 |
| 16. | भगवान की प्लानिंग | चितरंजन | 18 |
| 17. | हिंदी दिवस | राजीव शर्मा | 19 |
| 18. | बदलाव | नीतू सिंह | 20 |
| 19. | सच्चा जीवन और कर्म | हर्ष शर्मा | 21 |
| 20. | विज्ञान चालीसा | अमर दीप | 22 |
| 21. | प्रसन्न रहने के गुर | राकेश मिश्रा | 23 |
| 22. | मां की महिमा | आरती | 24 |
| 23. | सुविचार | शाहिन | 24 |
| 24. | क्या आपको पता है | पृथी सिंह | 25 |
| 25. | सबसे बड़ा धन | राजेश कुमार मीना | 27 |
| 26. | न ज़ाने आगे क्या होगा | पृथी सिंह | 28 |
| 27. | तू लड़की है | शाहिन | 28 |
| 28. | स्वच्छ भारत | निर्भय कुमार मिश्रा | 29 |
| 29. | स्टार्ट अप इंडिया | सुरुचि वर्मा | 31 |
| 30. | स्वच्छ भारत | मनीष रंजन | 33 |
| 31. | महान प्रेरणा स्रोत – स्वामी विवेकानंद | सुमित रस्तोगी | 34 |
| 32. | आ | रामचन्द्र वर्मा 'साहिल' | 36 |
| 33. | इसलिये बेचैन हूँ | रामचन्द्र वर्मा 'साहिल' | 36 |
| 34. | वो सुबह ज़रूर आएगी | प्रियरंजन "प्रियम" | 37 |
| 35. | मंजिल | प्रियरंजन "प्रियम" | 38 |
| 36. | जीव निर्माणगाथा | मनोरंजन | 39 |
| 37. | जीवन शैली प्रबंधन | प्रीति बॉंझल | 40 |
| 38. | हिंदी पखवाड़े का आयोजन | | 42 |
| 39. | हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं | | 46 |
| 40. | हिन्दी कार्यशाला | | 47 |
| 41. | क्षेत्रीय दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र (पश्चिमी क्षेत्र) मुंबई | | 48 |
| 42. | राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान | | 49 |

# माँ सरस्वती वंदना

वर दे, वीणा वादिनी वर दे।
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव भारत में भर दे।

काट अंध उर के बंधन स्तर
बहा जननि ज्योतिर्मय निर्झर
कलुष भेद तम हर प्रकाश भर
जगमग जग कर दे।
वर दे, वीणा वादिनी वर दे।

नव गति नव लय ताल छंद नव
नवल कंठ नव जलद मंद्र रव
नव नभ के नव विहग वृंद को,
नव पर नव स्वर दे।

वर दे, वीणा वादिनी वर दे।
प्रिय स्वतंत्र रव, अमृत मंत्र नव भारत में भर दे।

राजेश कुमार
प्रोटोकॉल अधिकारी (प्रशासन)

## स्वागत

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र (टीईसी) दूरसंचार विभाग के नए सचिव श्री जे. एस. दीपक का हार्दिक स्वागत करता है एवं उनके सक्षम नेतृत्व में नए आयाम प्राप्त करने की अपेक्षा के साथ उनके उज्जवल भविष्य की कामना करता है । श्री जे. एस. दीपक के लिए यह विभाग नया नहीं है, पूर्व में वे अप्रैल 2008 से जुलाई 2010 तक विभाग के संयुक्त सचिव के रूप में कार्य कर चुके हैं।

श्री जे. एस. दीपक भारतीय प्रशासनिक सेवा के 1982 बैच के उत्तर प्रदेश कैडर के अधिकारी हैं । उन्होंने प्रतिष्ठित संस्थान आई.आई.एम., अहमदाबाद से एम.बी.ए. की उपाधि प्राप्त की है ।

वर्ष 2015–16 में वे इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के सचिव रहे । इस दौरान उन्होंने डिजिटल इंडिया एवं ई–गर्वनेन्स से संबंधित कार्यों के समन्वय का नेतृत्व किया। उन्होंने आईटी/आईटीईएस सेवाओं से संबंधित कार्यो और इलेक्ट्रॉनिक विनिर्माण को बढ़ावा देने में भी भूमिका निभाई है । ऑनलाइन प्रमाणीकरण हेतु 'आधार' का प्रयोग एवं नामांकन का कार्य भी उनके दिशा–निर्देशों के अंतर्गत संपन्न हुआ है । उन्होंने विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं, नेशनल सेंटर ऑफ एक्सिलेंस तथा इंक्यूबेटर से स्टार्ट–अप में भी अपना मार्गदर्शन दिया तथा इंटरनेट गर्वनेन्स के क्षेत्र में भारत के प्रयासों का नेतृत्व किया ।

उन्हें भारत सरकार में, खासकर आर्थिक मंत्रालयों में सफलतापूर्वक कार्य करने का अनुभव है। पिछले 5 वर्षों में उन्होंने वाणिज्य विभाग में संयुक्त सचिव तथा अपर सचिव के रूप में कार्य किया है। अपर सचिव के रूप में, उनकी देखरेख में भारत की व्यापार नीति तैयार की गई और इसका कार्यान्वयन हुआ। वे विश्व व्यापार संगठन के, 'क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी' समझौता, जिसमें 16 देशों में आपस में बातचीत हुई, में भारत के मुख्य वार्ताकार थे । उन्होंने भारत से विभिन्न सेवाओं के निर्यात को बढ़ावा देने में भी अपनी अहम भूमिका का निर्वहन किया है ।

उन्होंने अप्रैल, 2008 से जुलाई, 2010 तक संयुक्त सचिव, दूरसंचार के पद पर रहते हुए 3जी/4जी स्पेक्ट्रम की नीलामी की रूपरेखा तैयार की और इसे संचालित किया जिससे भारत सरकार को 106260 करोड़ रुपए (यूएस 24.5 बिलियन डॉलर) की राजस्व आय प्राप्त हुई । यह एक महत्वपूर्ण कार्य था जहां भारत में पहली बार स्पेक्ट्रम की ई–नीलामी निष्पक्ष तरीके से हुई जिससे वॉइस और डाटा सेवाओं का विस्तार हुआ। यह विभिन्न क्षेत्रों में अनुवर्ती नीलामी के लिए प्रतिदर्श बन गया ।

उन्होंने भारत के राज्य व्यापार निगम (एसटीसी) तथा भारत व्यापार प्रमोशन संगठन (आईटीपीओ) में अध्यक्ष

एवं प्रबंधक निदेशक के पद पर भी कार्य किया है । वे भारत संचार निगम लिमिटेड (बीएसएनएल), महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड(एमटीएनएल) तथा भारतीय विदेशी व्यापार संस्थान के 'बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स' के सदस्य भी रहे है । वर्तमान में श्री दीपक भारत के राष्ट्रीय इंटरनेट विनिमय (एनआईएक्सआई), सी एस सी ई– गर्वनेन्स सर्विसेस इंडिया लिमिटेड, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्मार्ट गवर्नमेंट (एनआईएसजी) के अध्यक्ष हैं और सेंट्रल गर्वनिंग काउंसिल ऑफ द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउन्टन्टस ऑफ इंडिया के सदस्य हैं।

उन्हें भारतीय प्रबंधन संस्थान (आईआईएम) अहमदाबाद एवं लखनऊ, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय प्रशासन अकादमी (एलबीएसएनएए), मसूरी, इंडियन स्कूल ऑफ बिजनेस (आईएसबी), हैदराबाद, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ कॉर्पोरेट अफेयर्स, दिल्ली और भारतीय विदेश व्यापार संस्थान, नई दिल्ली में प्रबंधन, व्यापार और दूरसंचार एवं संचार आदि से संबंधित विषयों पर व्याख्यान देने हेतु आमंत्रित किया जा चुका है ।

वे विभिन्न 'न्यूजलेटर' के संपादक रहे हैं तथा विकास के मुद्दे पर उनके कई लेख 'द टाइम्स ऑफ इंडिया' के संपादकीय पृष्ठ तथा अन्य विभिन्न अखबारों में छप चुके है ।

श्री दीपक, दिनांक 1 फरवरी, 2016 से सचिव, दूरसंचार विभाग के पद पर कार्यरत हैं।

कविता...

## मुड़ें प्रकृति की ओर

विश्व की सुंदरता निहारो, दुनिया की प्रकृति निहारो,
शहरों के फूल निहारो, गाँवों की हरियाली निहारो।
मुड़ो प्रकृति की ओर, यह देता तुमको संदेश,
जीवन में नये रंग बिखरेंगे, यह नहीं कोई आदेश।
पर्यावरण को स्वच्छ रखना, हम सबकी है यही सोच,
रोज पौधों को पानी देना, न करना कोई संकोच।
जग लगेगा सबसे सुन्दर, हम सबका यह सपना,
वातावरण से दूर न भागो, समझो इसको अपना।
रंग–बिरंगी तितलियों को भी, लगेंगे फूल कुछ खास,
हर दिन फूलों की सेवा करेगें, तब होगी कोई नई बात।
हँसी–खुशी सबका जीवन, बीतेगा हरियाली के संग,
प्रकृति के गीत गुनगुनाकर, हम बिखेरेगें नए रंग।

**संकलनकर्ता**
**राकेश मिश्रा**
स्टोर सहायक (अनुबंधित)

कविता.....

## अकेला

अकेला समर में मैं ही बस लड़ा था
सभी शस्त्र मेरे सभी अस्त्र मेरे
खुदी के लिए सुसज्जित बड़ा था
अकेला समर में मैं ही बस लड़ा था

रथी भी मैं था, महारथी भी मैं था
जय हो तो मेरी, पराजय भी मेरी
बहुत मैं हँसा था, रोया भी बहुत था
अकेला समर में मैं ही बस लड़ा था

मैं अर्जुन बना था, सुयोधन भी तो मैं था
सभी मेरे भाई, सभी मेरे अपने
दोनों तरफ स्वयं ही मैं खड़ा था ?
मारा भी मैंने, मरा भी तो मैं था
अकेला समर में मैं ही बस लड़ा था

तुम्ही से तुम्हारा था क्या बैर माधव
क्यों ये सारा खेल तुमने रचा था
स्वयं से स्वयं की कैसी लड़ाई
क्या ये युद्ध तुमसे बड़ा था ?
अकेला समर में मैं ही बस लड़ा था

**अवधेश सिंह**
सहायक महानिदेशक (एफ.ए.)

## "जिंदगी क्या है"

आज कल ज़िंदगी लगता है बस भागी चली जा रही है, किसी रेलगाड़ी की तरह जिसे पता तो है कहीं जाना है, पर कहाँ ये नहीं पता। जब यही उलझने कदाचित आपे से बाहर हो जाती है तभी मन के विचार हृदय में मथ जाते है, एक पंक्ति एक कविता जन्म लेती है!

जिंदगी है मंजिल या सिर्फ रास्ता !
अगर मंजिल, तो मिली नहीं
अगर रास्ता, तो सही नहीं !!

जिंदगी है खुशी या सिर्फ गम !
अगर खुशी तो मिली नहीं
अगर गम, तो सही नहीं !!

जिंदगी है आराम या सिर्फ काम !
अगर आराम, तो मिली नहीं
अगर सिर्फ काम, तो सही नहीं !!

लेख...

# मोबाइल व सेल्फी

आधुनिक भारत के इस डिजिटल क्रांति के युग में, दो नये शब्दों ने इतने कम समय में डिक्शनरी में अपनी जगह उसी इस तरह से बनायीं है जैसे सचिन तेंदुलकर ने बचपन में ही क्रिकेट में अपना नाम कमा लिया था। वे शब्द है सेल्फी और वेल्फी।

आज के इस युग में, हर ऐरे गैरे नथ्थू खेरे के पास, एक ऐसा मोबाईल फोन जिसमें कम से कम ड्यूल सिम और इन्टरनेट की सुविधा हो, होना परम आवश्यक है। पहले वी. आई. पी. की श्रेणी में आने वाले लोग ही लैंडलाइन फोन की सुविधा उठा पाते थे और मोबाइल होना स्टेटस सिम्बल माना जाता था परंतु आज, मोबाइल हर आयु, वर्ग और लिंग के लोगों के लिए अति आवश्यक वस्तु बन चुका है। व्यक्ति भोजन के बिना दिन आसानी से बिता सकता है किंतु मोबइल के बगैर तो एक पल भी नहीं गुजार सकता। यह हर व्यक्ति के लिए रोटी, कपड़ा और मकान के साथ चौथी आधारभूत जरूरत बन चुका है। आज घर से बाहर जाने वाला व्यक्ति अगर मोबाइल घर भूल जाये तो उसकी हालत ऐसी ही होती है जैसे युद्ध के लिए निकला सैनिक अपने साथ शस्त्र ले जाना भूल गया हो। अगर किसी व्यक्ति के मोबाइल की बैटरी डाउन हो जाये तो ऐसा लगता है, जैसे व्यक्ति के अन्दर ग्लूकोस की कमी आ गयी हो। अपने आसपास जीवन में मोबाइल चार्ज करने के लिए चार्जर मांगता हुआ व्यक्ति तो हर दुसरे रोज दिखना आम बात है। उसे देखकर ऐसा लगता है जैसे किसी गरीब व्यक्ति का बच्चा भूख से मर रहा हो और वो गरीब व्यक्ति भोजन की भीख मांग रहा हो। जीवन के हर कदम पर इसकी आवयश्कता महसूस की जाती है। इसकी डयूटी सुबह मूर्गे की बांग के समान अलार्म बजा कर उठाने से प्रारम्भ होती है। भजन सुनाना, योग क्रियाएं करवाना, फेसबुक के जाने–अनजाने फ्रेड्स से मिलवाना, गुड मार्निंग के मैसेज दिलवाना, एक से एक उपदेशात्मक संदेश पंहुचाना, गुगल के माध्यम से अनेक वेबसाइट्स की यात्रा के साथ, रात को मां की तरह लोरी सुना कर सपनों की दुनिया तक ले जाने का काम ये बड़ी बखूबी से निभा रहा है।

यदि हम कहे कि ये हमारे जीवन का मार्गदर्शक है तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। हम फेसबुक और व्हाट्सएप के संदेशों को लाइक कर, शेअर और कमेंटस कर कई लोगों के दिल में स्थान बना चुके हैं। हमारा पूरा समाजशास्त्र मोबाइल के भीतर समा गया है। सारे रिश्ते इसी माध्यम से निभाए जा रहे हैं। चार लोग जब मिलते है तो साथ बैठे होने के वाबजूद अपने अपने फोन में गर्दन झूका के डुबे हुए रहते है। ऐसा लगता है मानो चारो लोग किसी व्यक्ति की शोक सभा में बैठे हो। यदि सामने वाले से कोई बात करनी भी हो, तो सीधे बात करने की अपेक्षा, व्हाट्सएप पर बात करना आधुनिकता का सिम्बल माना जाता है। लैंडलाइन तो गधे के सिंग और घर के रेडियो की तरह गायब हो चुका है। कुछ लोग भीड़ में खड़े होकर आसमान की तरफ देखे रहे हो और उनमें से कोई एक हाथ ऊपर करके खडा हो तो आप बिलकुल न समझे कि वह आदमी तारामंडल का विशेषज्ञ है और तारामंडल के बारे में जानकारी दे रहा हैं बल्कि वे लोग शैल्फी ले रहे हैं। कई लोग मन ही मन बड़बड़ाते हुए चलते हैं जैसे कोई मानसिक विक्षिप्त हो। कई लोगों की तो, सिर और कंधों के बीच इसे दबा कर गाड़ी पर बतियाने से, गर्दन ही तिरछी हो गई।

व्हाट्सएप्प, फेसबुक टवीटर और भी बहुत कुछ इसके सगे भाई–बहन है। इन सब को चलाने के लिए मोबाइल नाम का श्री यंत्र को होना ठीक वैसा ही है, जैसे शरीर की भीतर आत्मा का। ये हर घर, हाथ, पर्स और पॉकेट में पाया जाता है। इसकी पहुंच शमशान घर तक हो चुकी है। शमशान तक मुर्दे को एक से एक नई रिंग टोन सुनाई जाती है ताकि उसे इस संसार को छोड़ कर जाने का दुख न हो। जो संगी–साथी, नाते–रिश्तेदार अंतिम क्रिया के समय तक नहीं पहुंच पाए, उनको इसके माध्यम से अंतिम दर्शन कराए जाते हैं। अंतिम संस्कार के बाद भी इसकी भूमिका समाप्त नहीं होती। तेरहवीं की पूजा हो या श्राद्ध, इसे मृत आत्मा की शांति के लिए, पंडित जी को लालटेन, छाता, चप्पल के साथ दान किया जा रहा है। मोबाइल जीवन के साथ भी और जीवन के बाद भी काम आने लगा है।

एक डॉक्टर की भाषा में, यदि मोबाइल चार्जिंग पर लगा है तो सलाइन लगी हुई है, यदि मोबाइल हेंग हो जाता है तो कहते है इसका ई.सी.जी. ठीक नहीं है, इसमें वायरल इंफेक्शन हो चुका है इसे एंटी वायरल (वायरस) ड्रीप लगानी होगी। इसकी कीडनी (सॉफ्टवेअर) ठीक से काम नहीं कर रही, इसे शीघ्र ही डायलसिस (फार्मेट) करना होगा।

सेल्फी का फीवर पूरी दुनिया को अपनी गिरफ्त में लिये हुए है। एक विशेष प्रकार की प्रक्रिया, जिसे सेल्फी कहते है, विशेषकर इस मकसद से की जाती है कि इससे प्राप्त फोटो को फेसबुक और व्हाट्सएप्प पर डाला जा सके। इस प्रक्रिया से प्राप्त फाटो में चेहरे थोड़े सुज़े हुए लगते है जैसी किसी मधुमक्खी ने काट लिया हो। फिर भी यह सेल्फी प्रक्रिया काफी प्रचलन में है। आज बच्चा–बच्चा सेल्फी का दीवाना है। शायद ही कोई ऐसा व्यक्ति हो जिसे सेल्फी जैसी चीज से परहेज हो। सेल्फी का भूत, इस कदर, दिलों–दिमाग पर हावी हो चुका है कि कितने ही व्यक्ति, सेल्फी के चक्कर में यमलोक सिधार गये। पर वह जीना भी क्या जीना, जिसमें सेल्फी ना हो। खुद को कैमरे में कैद करने की इस कला का हर एज ग्रुप दीवाना हो चुका है। प्रधानमंत्री भी इस शमा के परवाने हैं। स्वच्छता अभियान का प्रथम चरण 'सेल्फी लेना' है।

एक नए शोध में खुलासा हुआ है कि करीब 1200 साल बाद पैदा होने वाले बच्चे का एक हाथ, उसके दूसरे हाथ की तुलना में काफी लंबा होगा। ऐसा सेल्फी के बढ़ते प्रभाव के कारण होगा। इससे मनुष्यों की भावी पीढ़ियों को अपनी सेल्फी लेने में वैसी दिक्कत नहीं आयेगी जैसी कि आज आ रही है। यह शोध लंदन स्थित द नेचुरल एनवायरमेंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट में डेवलपमेंट डिपार्टमेंट के प्रमुख प्रो. रिचर्ड डारविन ने किया है। डॉ. डारविन ने 'मानव का विकास सिद्धांत' का हवाला देते हुए कहा कि प्रकृति का यह नियम है कि शरीर के जिस अंग का इस्तेमाल जितना ज्यादा होता है, उसका उतना ही अधिक विकास होता जाता है। सेल्फी के कारण मनुष्य के हाथ के मामले में भी ऐसा ही होगा। उन्होंने कुछ आंकड़े पेश करते हुए कहा कि पुरूष दिन में औसतन 70 बार हाथ को बढ़ाकर मोबाइल में अपनी सेल्फी लेता है। महिलाओं के मामले में यह आंकड़ा और भी उत्साहजनक है। एक महिला दिन में औसतन 240 से भी अधिक बार सेल्फी लेती है। डॉ. डारविन के अनुसार अगर यही प्रवृत्ति बनी रही तो इसका असर अगली पीढ़ी से ही नजर आने लग जाएगा। अगली पीढ़ी में पैदा होने वाले बच्चे का एक हाथ दूसरे हाथ, की तुलना में, आधा इंच ज्यादा होगा। अगले पांच सौ सालों में यह लंबाई करीब एक फीट और 1200 साल में ढाई फीट अधिक हो जायेगी।

सेल्फी से अभी लोगों का मन पूरी तरह भरा नहीं था और वेल्फी ने अपनी जगह बनाना शुरु कर दी। वेल्फी में व्यक्ति अपना वीडियो खुद बनाता है। साथ ही साथ उसमें आवाज किसी और वीडियो या संगीत की सुनाई देती है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिसका चेहरा दिख रहा है, वही बोल रहा है, जबकि आवाज किसी और की होती है। सेल्फी और वेल्फी का खुमार युवा वर्ग में सिर चढ़ कर बोल रहा है। दुसरे शब्दों में कहे तो जिस तरह पहले फोटोग्राफर होता था, वैसे ही आजकल सेल्फिग्राफर और वेल्फिग्राफर हो गया है। इन सेल्फिग्राफर की प्रजाति ने फोटोग्राफर की प्रजाति को पूरी तरह से विलुप्त होने की कगार पर ला कर खड़ा कर दिया है। कुछ समय पहले तक एक बड़ा सा काला कैमरा लिए फोटोग्राफर एक बड़ी सी ग्रुप का फोटो लेता था। यह उसके अधिकार क्षेत्र में आता था कि वह किसे कहा खड़ा करें। स्माइल प्लीज कहते हुए वो केवल एक क्लिक करता था, अगर उस क्लिक के समय आपकी आखें गलती से बंद हो गयी तो समझो जिन्दगी भर उस सोती हुई फोटो को देख कर आप खुद को कोसते रहेंगे कि उस समय मैनें पलके क्यों झपकाई। आज वही फोटोग्राफर अपनी प्रजाति को विलुप्त होते देख रहा है। युवा वर्ग कुछ सेंकड में, सेल्फी खींच कर इन्टरनेट पर अपलोड कर जो खुशी पा रहा है क्या वो फिर से फोटोग्राफर को अपने जीवन में जगह देना चाहेगा। आशा करता हूँ एक लम्बे समय तक युवा वर्ग के दिलों पर राज करने वाली फोटोग्राफर की प्रजाति इतनी जल्दी विलुप्त नहीं होगी।

**राजेन्द्र कुमार अग्रवाल**
परामर्शदाता (एन.जी.एस.)

## भावपूर्ण श्रद्धांजलि

श्री पीयूष अग्रवाल, सदस्य (प्रौद्योगिकी) का दिनांक 15/04/2016 को दिल का दौरा पड़ने से आकस्मिक निधन हो गया। घोर दुःख और पीड़ा की इस घड़ी में टीईसी परिवार के सदस्य उनके परिवार के दुःख में पूर्णतः शामिल हैं और परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को चिरस्थायी शांति तथा उनके समस्त परिवार को शक्ति प्रदान करे ताकि वे इस दुःख और पीड़ा को धैर्यपूर्वक सहन कर सकें।

वे भले ही अब हमारे बीच नहीं रहे परंतु उनके नेतृत्व, कार्यकुशलता, अच्छे स्वभाव तथा कर्तव्यनिष्ठा के लिए उन्हें हमेशा याद किया जाएगा।

कहानी...

# राधा

एक दिन रुक्मणी ने भोजन के बाद, श्री कृष्ण को दूध पीने को दिया। दूध ज्यादा गरम होने के कारण श्री कृष्ण के हृदय में लगा और उनके श्रीमुख से निकला–'' हे राधे !' 'ये सुनते ही रुक्मणी बोली–प्रभु! ऐसा क्या है राधा जी में, जो आपकी हर साँस पर उनका ही नाम होता है? मैं भी तो आपसे अपार प्रेम करती हूँ... फिर भी, आप हमें नहीं पुकारते !!

श्री कृष्ण ने कहा – देवी! क्या आप कभी राधा से मिली हैं? और मंद मंद मुस्काने लगे...। अगले दिन रुक्मणी राधाजी से मिलने उनके महल में पहुंची । राधाजी के कक्ष के बाहर अत्यंत खूबसूरत स्त्री को देखा... और, उनके मुख पर तेज होने कारण उसने सोचा कि–

ये ही राधाजी हैं और उनके चरण छुने लगी! तभी वो बोली –आप कौन हैं? तब रुक्मणी ने अपना परिचय दिया और आने का कारण बताया... तब वो बोली– मैं तो राधा जी की दासी हूँ। राधाजी तो सात द्वार के बाद आपको मिलेंगी!! रुक्मणी ने सातों द्वार पार किये... और, हर द्वार पर एक से एक सुन्दर और तेजवान दासी को देख सोच रही थीं कि–अगर उनकी दासियाँ इतनी रूपवान हैं... तो, राधारानी स्वयं कैसी होंगी? सोचते हुए राधाजी के कक्ष में पहुंची...।

कक्ष में राधा जी को देखा–अत्यंत रूपवान तेजस्वी जिसका मुख सूर्य से भी तेज चमक रहा था। रुक्मणी सहसा ही उनके चरणों में गिर पड़ी...पर, ये क्या राधा जी के पूरे शरीर पर तो छाले पड़े हुए हैं ! रुक्मणी ने पूछा–देवी आपके शरीर पे ये छाले कैसे ? तब राधा जी ने कहा–देवी !

कल आपने कृष्णजी को जो दूध दिया... वो ज्यादा गरम था ! जिससे उनके हृदय पर छाले पड गए... और, उनके हृदय में तो सदैव मेरा ही वास होता है..!!

इसलिए कहा जाता है–बसना हो तो...'हृदय' में बसो किसी के..! 'दिमाग' में तो..लोग खुद ही बसा लेते हैं..!!

हर्ष शर्मा
सहायक महानिदेशक (एन.जी.एस.)

लेख...

# नवरात्रि माँ दुर्गा

नवरात्रों में माँ दुर्गा के नौ रुपों की पूजा–उपासना की जाती है। हिन्दू धर्म में माता दुर्गा अथवा पार्वती के नौ रुपों को शक्ति का रूप कहा जाता है। माँ दुर्गा के इन नवों रुपों को पापों की विनाशिनी कहा जाता है। हर देवी के अलग–अलग वाहन हैं, अस्त्र–शस्त्र हैं परंतु यह सब एक हैं। माँ दुर्गा के नौ रुप क्रमशः निम्न दिये गए हैं–

**1. शैलपुत्री** – दुर्गाजी पहले स्वरुप, में 'शैलपुत्री' के नाम से जानी जाती हैं। पर्वतराज हिमालय के घर पुत्री रुप में उत्पन्न होने के कारण इनका नाम 'शैलपुत्री' पड़ा। नवरात्र पूजन के प्रथम दिन, कलश स्थापना के साथ इनकी ही पूजा और उपासना की जाती है। इनका वाहन वृषभ है, इसलिए यह देवी वृषारुढ़ा के नाम से भी जानी जाती हैं। इस देवी ने दाएं हाथ में त्रिशूल धारण कर रखा है और बाएं हाथ में कमल सुशोभित हैं। यही देवी प्रथम दुर्गा हैं। यही सती के नाम से भी जानी जाती हैं।

**2. ब्रह्मचारिणी** – माँ दुर्गा की नवशक्ति का दूसरा स्वरूप ब्रहाचारिणी का है। यहां ब्रह्म का अर्थ तपस्या से है। माँ दुर्गा का यह स्वरूप भक्तों और सिद्धों को अनंत फल देने वाला है। इनकी उपासना से तप, त्याग, वैराग्य, सदाचार और संयम की वृद्धि होती है। इस देवी के दाएं हाथ में गुलाब का फूल है और बाएं हाथ में यह कमण्डल धारण किए हैं। इस देवी की कथा का सार यह है कि जीवन के कठिन संघर्षों में भी मन विचलित नहीं होना चाहिए। रुद्राक्ष उनका बहुत सुंदर गहना है।

**3 चंद्रघंटा** – माँ दुर्गाजी की तीसरी शक्ति का नाम चंद्रघंटा है। इस देवी के मस्तक पर घंटे के आकार का आधा चंद्र है, इसीलिए इस देवी को चंद्रघंटा कहा गया है। इनके शरीर का रंग सोने के समान बहुत चमकीला है। इस देवी के दस हाथ हैं। वे खड्ग और अन्य अस्त्र–शस्त्र से विभूषित हैं। सिंह पर संवार इस देवी की मुद्रा, युद्ध के लिए उद्धत रहने की है। इसके घंटे सी भयानक ध्वनि से, अत्याचारी दानव–दैत्य और राक्षस काँपते रहते हैं। इस देवी की आराधना से साधक में वीरता और निर्भयता के साथ ही सौम्यता और विनम्रता का विकास होता है। देवी का यह स्वरूप परम शांतिदायक और कल्याणकारी है। इसीलिए कहा जाता है कि हमें निरंतर उनके पवित्र विग्रह को ध्यान में रखकर, साधना करनी चाहिए। उनका ध्यान हमारे इसलोक और परलोक, दानों के लिए कल्याणकारी और सद्गति देने वाला है।

**4. कुष्मांडा** – नवरात्रि में चौथे दिन देवी को कुष्मांडा के रूप में पूजा जाता है। जब सृष्टि नहीं थी, चारों तरफ अंधकार ही अंधकार था, तब इसी देवी ने अपने ईषत् हास्य से ब्रह्मांड की रचना की थी । इसीलिए इसे सृष्टि की आदिस्वरूपा या आदिशक्ति कहा गया है। इस देवी की आठ भुजाएं हैं, इसलिए यह अष्टभुजा

देवी कहलाई। इनके सात हाथों में क्रमशः कमण्डल, धनुष, बाण, कमल–पुष्प, अमृतपूर्ण कलश, चक्र तथा गदा हैं। आठवें हाथ में सभी सिद्धियों और निधियों को देने वाली जप माला है। इस देवी का वाहन सिंह है और इन्हें कुम्हड़े की बलि प्रिय है। संस्कृति में कुम्हड़े को कुष्मांड कहते हैं इसलिए इस देवी को कुष्मांडा के नाम से भी जाना जाता है। इस देवी का वास सूर्यमंडल के भीतर लोक में है। सूर्यलोक में रहने की शक्ति क्षमता केवल इन्हीं में है। इसीलिए इनके शरीर की कांति और प्रभा सूर्य की भांति ही दैदीप्यमान है। इनके ही तेज से दसों दिशाएं आलोकित हैं। ब्रह्मांड की सभी वस्तुओं और प्राणियों में इन्हीं का तेज व्याप्त है।

**5. स्कंदमाता** – स्कंदमाता, माँ दुर्गा का पांचवां स्वरूप है। इस देवी की चार भुजाएं हैं । यह दायीं तरफ की ऊपर वाली भुजा से स्कंद को गोद में पकड़े हुए हैं। नीचे वाली भुजा में कमल का पुष्प है। बायीं तरफ ऊपर वाली भुजा वरदमुद्रा में हैं और नीचे वाली भुजा में कमल पुष्प है। इनका वर्ण एकदम शुभ्र है। यह कमल के आसन पर विराजमान रहती है। इसीलिए इन्हें पद्मासना भी कहा जाता है। सिंह इनका वाहन है। पहाड़ों पर रहकर सांसरिक जीवों में नवचेतना का निर्माण करने वालीं है स्कंदमाता। कहते हैं कि इनकी कृपा से मूढ़ भी ज्ञानी हो जाता है। स्कंद कुमार कार्तिकेय की माता के कारण, इन्हें स्कंद नाम से अभिहित किया गया है। सूर्यमंडल की अधिष्ठात्री देवी होने के कारण इनका उपासक अलौकिक तेज और कांतिमय हो जाता है। अतः मन को एकाग्र रखकर और पवित्र रखकर इस देवी की अराधना करने वाले साधक या भक्त को भवसागर पार करने में कठिनाई नहीं आती है।

**6. कात्यायनी** – इनकी चार भुजाएं हैं। दायीं तरफ का ऊपर वाला हाथ अभयमुद्रा में है तथा नीचे वाला हाथ वर मुद्रा में। माँ के बाँयी तरफ के ऊपर वाले हाथ में तलवार है व नीचे वाले हाथ में कमल का फूल सुशोभित है। इनका वाहन भी सिंह है। कात्य गोत्र में विश्वप्रसिद्ध महर्षि कात्यायन ने भगवती पराम्बा की उपासना की, कठिन तपस्या की। उनकी इच्छा थी कि उन्हें पुत्री प्राप्त हो। माँ भगवती ने उनके घर पुत्री के रुप में जन्म लिया। इसलिए वह देवी कात्यायनी कहलायी। इनका गुण शोधकार्य है। इसलिए इस वैज्ञानिक युग में कात्यायनी का महत्व सर्वाधिक हो जाता है। इनकी कृपा से सारे कार्य पूरे हो जाते हैं। यह वैद्यनाथ नामक स्थान पर प्रकट होकर पूजी गईं। भगवान कृष्ण को पति रुप में पाने के लिए ब्रज की गोपियों ने इन्हीं की पूजा की थी। यह पूजा कालिंदी यमुना के तट पर की गई थी। इसीलिए यह ब्रजमंडल की अधिष्ठात्री देवी के रुप में प्रतिष्ठित हैं।

**7. कालरात्रि माँ** – माँ दुर्गा की यह सातवीं शक्ति कालरात्रि के नाम से जानी जाती है अर्थात जिनके शरीर का रंग घने अंधकार की तरह एकदम काला है। नाम से जाहिर है कि इनका रुप भयानक है। सिर के बाल बिखरे हुए हैं और गले में विद्युत की तरह चमकने वाली माला है। अंधकारमय स्थितियों का विनाश करने वाली शक्ति हैं कालरात्री, जो काल से भी रक्षा करती है। इस देवी के तीन नेत्र हैं। यह तीनों ही

नेत्र ब्रह्मांड के समान गोल हैं इसके बायीं तरफ के ऊपर वाले हाथ में लोहे का कांटा तथा नीचे वाले हाथ में खड्ग है। इनका रुप भले ही भयंकर हो लेकिन यह सदैव शुभ फल देने वाली मां हैं। इसीलिए यह शुभंकरी कहलाईं। इनकी सांसों से अग्नि निकलती रहती है। यह गर्दभ की सवारी करती हैं। ऊपर उठे हुए दाहिने हाथ की वर मुद्रा भक्तों को वर देती है। दाहिनी तरफ ही का नीचे वाला हाथ अभय मुद्रा में है। यानी भक्तों हमेशा निडर, निर्भय रहो। इनकी कृपा से भक्त हर तरह के भय से मुक्त हो जाता है।

**8. महागौरी** – माँ दुर्गा का आठवां स्वरुप महागौरी है। जैसा नाम से प्रकट है, इनका रुप पूर्णतः गौर वर्ण है। इनकी उपमा शंख, चंद्र और कुंद के फूल से दी गई है। अष्टवर्षा भवेद् गौरी यानी इसकी आयु आठ साल की मानी गई है। इनके सभी आभूषण और वस्त्र सफेद हैं। इसीलिए उन्हें श्वेताम्बर कहा गया है। 4 भुजांए हैं और वाहन वृषभ है इसीलिए वृषारुढ़ा भी कहा जाता है। इनका ऊपर वाला दाहिना हाथ अभय मुद्रा में है तथा नीचे वाले हाथ में त्रिशूल है। ऊपर वाले बांए हाथ में डमरु है और नीचे वाले हाथ में वर मुद्रा है। इनकी पूरी मुद्रा बहुत शांत है। पति रुप में शिव को पाने के लिये महागौरी ने कठोर तपस्या की थी। इसी वजह से उनका शरीर काला पड़ गया लेकिन तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान शिव ने इनके शरीर को गंगा के पवित्र जल से धोकर कांतिमय बना दिया। उनका रुप गौर वर्ण का हो गया। इसीलिए यह महागौरी कहलाईं।

**9. सिद्धिदात्री** – भगवान शिव ने भी इस देवी की कृपा से तमाम सिद्धियां प्राप्त की थीं। इस देवी की कृपा से ही शिवजी का आधा शरीर देवी का हुआ था। इसी कारण शिव अर्द्धनारीश्वर नाम से प्रसिद्ध हुए। हिमाचल के नंदापर्वत पर इनका प्रसिद्ध तीर्थ है। अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व आठ सिद्धियां होती हैं। इसलिए इस देवी की सच्चे मन से विधि विधान से उपासना – आराधना करने से यह सभी सिद्धियां प्राप्त की जा सकती हैं। इस देवी के दाहिनी तरफ वाले हाथ में चक्र, ऊपर वाले हाथ में गदा तथा बायीं तरफ के नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल का पुष्प है। इनका वाहन सिंह है और यह कमल पुष्प पर भी आसीन होती हैं। विधि विधान से नौंवे दिन इस देवी की उपासना करने से सिद्धियां प्राप्त होती हैं। यह अंतिम देवी हैं। इनकी साधना करने से लौकिक और परलौकिक सभी प्रकार की कामनाओं की पूर्ति हो जाती है।

राजेश त्रिपाठी
सहायक महानिदेशक (एन.जी.एस.)

कविता...

## अति कभी न करना इति हो जायेगी

अति कभी ना करना प्यारे, इति तेरी हो जाएगी।
अति सुन्दर थी सीता मैया, जिसके कारण हरण हुआ।
अति घमंडी था वो रावण, जिसके कारण मरण हुआ।
अति वचन बोली पांचाली, महाभारत का युद्ध हुआ।
अति सदा वर्जित हैं बन्दे क्षति तेरी हो जाएगी।
अति विश्वास कभी न करना मति तेरी फिर जाएगी।
अति के पीछे ना भागो, अति अन्त करवाएगी।
अति कभी न करना बन्दे, इति तेरी हो जाएगी।
बिन पखों के पंछी जैसी गति तेरी हो जाएगी।

## कहते हैं

1. जो बिगड़ी को बनाते हैं, उसे भगवान कहते हैं।
2. जो मुसीबत में काम आये, उसे इंसान कहते हैं।
3. जो पैदा दर्द को कर दें, उसे तान कहते हैं।
4. जो रिझाता है भगवान को, उसे गान कहते हैं।
5. जो दिल में राम को रखता, उसे हनुमान कहते हैं।
6. जो पीता हैं जहर, उसे शिव भगवान कहते हैं।
7. जो निभायें वचन पिता का, उसे श्री राम कहते हैं।
8. जो दिया उपदेश गीता में, उसे कृष्ण भगवान कहते हैं।

**ऊषा कुमारी**
दूरसंचार सुपरवाइजर (वित्त विभाग)

कविता...

## समान्तर ब्रह्माण्ड

अनेक समान्तर ब्रह्मांडो में है एक ब्रह्माण्ड,
उसी ब्रह्माण्ड के भीतर अनेकों आकाश गंगाएँ,
उसी आकाश गंगा के भीतर है अनेकों सौर मंडल
सौर मंडल भीतर है गृह, पृथ्वी
जीवित मनुष्यों से भरी हुई
उन्हीं मनुष्यों में एक मनुष्य सोचता
कौन किससे बड़ा है
कौन किसके चक्कर लगा रहा है
कौन किससे दूर जा रहा है
मनुष्य मनुष्य से या ब्रह्माण्ड ब्रह्माण्ड से।

**अवधेश सिंह**
सहायक महानिदेशक (एफ.ए.)

शिक्षा....

## बाँझ रह जाना अच्छा

रेलवे स्टेशन पर चाय बेचने वाले लड़के की नजरें अचानक एक बुजुर्ग दंपति पर पड़ी। उसने देखा कि वो बुजुर्ग पति अपनी पत्नी का हाथ पकड़कर उसे सहारा देते हुए चल रहा था। थोड़ी दूर जाकर वो दंपति एक खाली जगह देखकर बैठ गए। कपड़ों के पहनावे से वे गरीब लग रहे थे। तभी ट्रेन आने के संकेत हुए और वो चाय वाला अपने काम में लग गया। शाम में जब वो चाय वाला वापिस स्टेशन पर आया तो देखा कि वे बुजुर्ग दंपति अभी भी उसी जगह बैठे हुए हैं। वे उन्हें देखकर कुछ सोच में पड़ गया। देर रात तक जब चाय वाले ने उन बुजुर्ग दंपति को उसी जगह पर देखा तो उनके पास गया उनसे पूछने लगाः बाबा, आप सुबह से यहाँ क्या कर रहें है? आपको जाना कहाँ है? बुजुर्ग पति ने अपने जेब से कागज का टुकड़ा निकालकर चाय वाले को दिया और कहाः बेटा, हम दोनों में से किसी को पढ़ना नहीं आता, इस कागज में मेरे बेटे का पता लिखा हुआ है। मेरे छोटे बेटे ने कहा था कि अगर भैया आपको लेने ना आ पाये तो किसी को भी ये पता बता देना, आपको सही जगह पहुँचा देगा। चाय वाले ने उत्सुकतावश जब वो कागज खोला तो उसके होश उड़ गये। उसकी आँखों से एकाएक आंसूओं की धारा बहने लगी। उस कागज में लिखा था कि..... कृपया इन दोनों को अपने शहर के किसी वृद्धाश्रम में भर्ती करा दीजिए, बहुत–बहुत मेहरबानी होगी....दोस्तों ! धिक्कार है ऐसी संतान पर, इसके बजाय तो बाँझ रह जाना अच्छा होता।

## प्रेरणात्मक प्रसंग

एक मेंढ़क पेड़ की चोटी पर चढ़ने की सोचता है और आगे बढ़ता है बाकी के सारे मेंढ़क शोर मचाने लगते हैं ये असंभव है.... आज तक कोई नहीं चढ़ा ....ये असंभव है नहीं चढ़ पाओगे मगर मेंढ़क आखिर पेड़ की चोटी पर पहुँच जाता है..... जानते है क्यों ? क्योंकि मेंढ़क बहरा होता है और सारे मेढ़कों को चिल्लाते देख सोचता है कि सारे उसका उत्साह बढ़ा रहे है। इसलिए अगर आपको अपने लक्ष्य पर पहुंचना है तो नकारात्मक लोगों के प्रति बहरे हो जाइए।

संकलन कर्ता
अमर दीप
कनिष्ठ अनुवादक (एन.जी.एस.)

कविता...

# छब्बीस जनवरी का शुभ दिन

हर वर्ष तो आता है यह दिन
और आयेगा हर वर्ष यह दिन,
सदा अमर रहेगा भारत में,
छब्बीस जनवरी का यह शुभ दिन।।
कई सोच रहे यह शुभ दिन,
हर वर्ष तो आता जाता है,
राज पथ पर धूम मचाता है,
पर हमको क्या दे जाता है।।
''योगी'' बतलाता है, सबको
जो कुछ यह दिन दे जाता है,
इक मंत्र एकता का सबको,
हर बार सिखाने आता है।।
जो ब्लैक करें उन चोरों को,
कातिल और लुटेरों को,
पथ भटके हुए उन गुण्ड़ों को,
रिश्वत खोर उन ठगों को,
दल बदलू भ्रष्ट नेताओं को,
हर क्षेत्र में कामरत लोगों को,
समझाने आता बार–बार,
कुछ होश करो कुछ सोच करो,
आजादी को यह खतरा है,
फट त्यागों काले धंधों को।।
छब्बीस जनवरी सन् 1950 का
यह दिन था अति महान
जब भारत ने बनाया था
निज भारतीय विधान
फिर इसी विधान के अनुसार
होने लगे भारत के सब काज
सर्व प्रथम हर धर्म के लोग
एक हुये मिटा कर नफरत के सब रोग
अब सब धर्मों का है संगम यह भारत
जग में विशाल गणतंत्र देश है भारत ।।
अपनी सेना अपनी रक्षा
खेती बाड़ी सब अपनी हैं
आयुद्ध निर्माणमापी उद्योग धंधे
निजी क्षेत्र और सरकारी हैं।।
जल थल और व्योम में सैनिक
भारत के जांबाज़ यह सैनिक
सूझ बूझ और पूरी लगन से
हर मौसम और हर हाल में भारत की ये रक्षा करते।।
दिन प्रतिदिन उन्नति के पथ पर
देश तीव्र गति से दौड़ रहा
निज रक्षा और जरुरत के
नये–नये साधन नित खोज रहा।।
हर वर्ष की उन्नति का ब्योरा
इस दिन भारत देता है
राज पथ पर निज शक्ति को
अनेक रुपों में दर्शाता है।।
अर्ध शतक से कुछ ऊपर का
स्वतन्त्र भारत है निखर रहा
हर क्षेत्र में उन्नति के कारण
मेरे देश का नाम है चमक रहा।।
भाइयों निर्माण करो भारत का ऐसा
संतान भी जिस पर नाज करें
सिर ऊँचा कर सारे जग में
निज पुरखों का यश गान करें।।

**स्व. वाई पी चोपड़ा**
(पिताश्री श्री देव भूषण चोपड़ा, निदेशक (वित्त)

लेख..

# भगवान की प्लानिंग

एक बार भगवान से उनका सेवक कहता है, भगवान आप एक जगह खड़े–खड़े थक गये होंगे। एक दिन के लिए मैं आपकी जगह मूर्ति बन कर खड़ा हो जाता हूँ, आप मेरा रुप धारण कर घूम आओ। भगवान मान जाते हैं, लेकिन शर्त रखते हैं कि जो भी लोग प्रार्थना करने आयें, तुम बस उनकी प्रार्थना सुन लेना, कुछ बोलना नहीं।

मैंने उन सभी के लिए प्लानिंग कर रखी है। सेवक मान जाता है। सबसे पहले मंदिर में एक व्यापारी आता है और कहता है, भगवान मैंने एक नयी फैक्ट्री डाली है, उसे खूब सफल करना। वह माथा टेकता है, तो उसका पर्स नीचे गिर जाता है। वह बिना पर्स लिए ही चला जाता है। सेवक बेचैन हो जाता है। वह सोचता है कि रोक कर उसे बताये कि पर्स गिर गया, लेकिन शर्त की वजह से वह नहीं कह पाता। इसके बाद एक गरीब आदमी आता है और भगवान को कहता है कि घर में खाने को कुछ नहीं, भगवान मद्द करो। तभी उसकी नजर पर्स पर पड़ती है। वह भगवान का शुक्रिया अदा करता है और पर्स लेकर चला जाता है।

अब तीसरा व्यक्ति आता और वह नाविक होता है। वह भगवान से कहता है कि मैं 15 दिनों के लिए जहाज लेकर समुद्र की यात्रा पर जा रहा हूं। यात्रा में कोई अड़चन न आये भगवान। तभी पीछे से व्यापारी पुलिस के साथ आता है और कहता है कि मेरे बाद ये नाविक आया है। इसने मेरा पर्स चुरा लिया हैं । पुलिस नाविक को ले जा रही होती है कि सेवक बोल पड़ता है। अब पुलिस सेवक के कहने पर उस गरीब आदमी को पकड़ कर जेल में बंद कर देती है।

रात को भगवान आते हैं, तो सेवक खुशी–,खुशी पूरा किस्सा बताता है। भगवान कहते हैं, तुमने किसी का काम बनाया नहीं, बल्कि बिगाड़ा है। वह व्यापारी गलत धंधे करता है अगर उसका पर्स गिर भी गया, तो उसे फर्क नहीं पड़ता था। इससे उसके पाप ही कम होते, क्योंकि वह पर्स गरीब इंसान को मिला था। पर्स मिलने पर उसके बच्चे भूखों नहीं मरते। रही बात नाविक की, तो वह जिस यात्रा पर जा रहा था, वहां तूफान आनेवाला था। अगर वह जेल में रहता, तो जान बच जाती, उसकी पत्नी विधवा होने से बच जाती, तुमने सब गड़बड़ कर दी। कई बार हमारी लाईफ में ऐसी प्रोब्लम आती है, जब हमें लगता है कि ये मेरे साथ क्यों हुआ। लेकिन इसके पीछे भगवान की प्लानिंग होती है। जब भी कोई प्रोब्लम आये, उदास मत होना। इस कहानी को याद करना और सोचना कि जो भी होता है, अच्छे के लिए होता है।

कर्म ही पूजा है। धर्म ही कर्म पर आधारित है। कोई चीज या वस्तु देने से कम नहीं होती, बल्कि बढ़ती है। चीज या वस्तु को एक जगह रखें तो सीमित बन कर रह जाती है। मेहनत का फल हमेशा ही मीठा और मधुर होता है। इसलिये कर्म करो और फल की चिंता छोड़ दो। समय ही इंसान है, समय भगवान है, समय ही जीवन है।

चितरंजन
एम.टी.एस. (एन. आर.)

कविता...

# "हिंदी दिवस"

सोच रहा क्या शब्द पिरोउ, अपने भाव दर्शाने को ।
ऐ हिंद की बेटी हिंदी तुमको, अपना प्रेम दिखलाने को।।

स्वर और व्यंजन से सजा रूप, मन को हर पल हर्षाता है।
कल कल से नदी, झर झर झरना, शून्य में सद्रश्य हो जाता है।।

आरोह अवरोह के स्पंदन में, जब कोई कवि घिर जाता है।
होठों पे खिले, मन को छु ले एक अमर गीत बन जाता है।।

तेरे वर्णों की माला से, जब शब्दों का श्रृगांर करे
कोमल सी लता स्वर – सम्राज्ञी बन, लोगों के दिलों पर राज करे।।

सम्पूर्ण जगत में हिंदी तू, अपना परचम लहराती है।
सरल, सुगम, निर्मल भाषा के रूप जानी जाती है।।

लेकिन घर में अपने देखो, कैसा ये हाल तुम्हारा है।
जिसको करना था विश्व विजय, उसके लिये केवल पखवाड़ा है।।

है मन विचलित पर आशान्वित, बेटों ने हिन्द के ठाना है।
भारत की दुलारी बेटी का, गौरव वापस दिलवाना है।।

जो करते हैं हम प्रेम देश से, निज भाषा को अपनाना है
दिवस दो दिवस में नहीं हमें, नित हिंदी दिवस मनाना है।।

**राजीव शर्मा**
सहायक महानिदेशक (एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

लेख...

# बदलाव

मैं सुबह की सैर के लिए पार्क में गई तब मैंने देखा, दादा जी एक कोने में उदास बैठे थे। तब मैंने पूछा ''क्या हुआ दादा जी'' आज आप इतने उदास बैठे क्या सोच रहें हैं ?

दादा जी ने कहा, ''कुछ नहीं, बस यूहीं जिंदगी के बारे में सोच रहा था''। तब मैने दादा जी से कहा, जरा मुझे भी अपनी लाइफ के बारे बताइये न.....। दादा जी कुछ देर सोचते रहे और फिर बोले, जब मैं छोटा था, मेरे ऊपर कोई जिम्मेदारी नहीं थी, मेरी कल्पनाओं की भी कोई सीमा नहीं थी। मैं तब दुनिया बदलने के बारे में सोचा करता। जब मैं थोड़ा बड़ा हुआ – बुद्धि कुछ बढ़ी तो सोचने लगा, ये दुनिया बदलना तो बहुत मुश्किल काम है.....। इसलिए मैंनें अपना लक्ष्य थोड़ा छोटा कर लिया.....। सोचा दुनिया न सही मैं अपने देश को तो बदल सकता हूँ। पर जब कुछ और समय बीता, मैं अधेड़ होने को आया ..... तो लगा ये देश बदलना भी कोई मामुली बात नहीं है। हर कोई ऐसा नहीं कर सकता। चलो बस अपने परिवार और करीबी लोगों को बदलता हूँ....। पर अफसोस मैं वो भी नहीं कर पाया। ये सब सुनकर मेरी आखें नम हो आई, मैंनें सोचा अगर हर कोई ऐसा सोचे तो सब अच्छा होगा। फिर दादा जी और बात बताने लगे.....। दादा जी ने कहा, ''अब जब मैं इस दुनिया में कुछ दिनों का मेहमान हूँ तो मुझे एहसास होता है कि बस अगर मैंने खुद को बदलने का सोचा होता तो मै ऐसा जरूर कर पाता.... और हो सकता है, मुझे देखकर मेरा परिवार भी बदल जाता है। क्या पता उनसे प्रेरणा लेकर ये देश भी कुछ बदल जाता और तब शायद मैं इस दुनिया को भी बदल पाता।

ये कहते–कहते दादा जी की आँखे नम हो गयी और धीरे से बोले, बेटी! तुम मेरी जैसी गलती मत करना... कुछ और बदलने से पहले खुद को बदलना बाकि सब अपने आप बदलता चला जायेगा।

''दोस्तों'' हम सभी में दुनिया बदलने की ताकत है पर इसकी शुरूआत खुद से ही करनी होती है। कुछ और बदलने से पहले हमें खुद को बदलना होगा....। हमें खुद को तैयार करना होगा। Skills को Strengthen करना होगा... अपने बर्ताव को धनात्मक बनाना होगा । अपनी Determination को फोलाद करना होगा..... और तभी हम वो हर एक बदलाव ला पाएंगे जो हम सचमुच लाना चाहते हैं। दोस्तों, इसी बात को महात्मा गांधी ने बड़े प्रभावी ढ़ग से कहा है..... "Be the change that you want to see in the world". खुद में वो बदलाव करें, जो आप दुनिया में देखना चाहते हैं। तो चलिए आज से हम खुद में वह बदलाव करते है, जो हम दुनिया में देखना चाहते हैं।

नीतू सिंह
कार्यालय सहायक (टी. एंड ए.)
(अनुबंधित)

विचार...

# सच्चा जीवन और कर्म

व्यवहार मीठा ना हो तो हिचकियाँ भी नहीं आती,
बोल मीठे न हों तो कीमती मोबाईलों पर घन्टियां भी नहीं आती।
घर बड़ा हो या छोटा, अगर मिठास ना हो,
तो इन्सान तो क्या, चींटियां भी नजदीक नहीं आती।
जीवन का 'आरंभ' अपने रोने से होता है..,

**और**

जीवन का 'अंत' दूसरों के रोने से,
इस 'आरंभ और अंत' के बीच का समय भरपूर हास्य भरा हो...
बस यही सच्चा जीवन है...!!!

**हे प्रभु**
न किसी का फेंका हुआ मिले,
न किसी से छीना हुआ मिले,
मुझे बस मेरे नसीब में
लिखा हुआ मिले,
ना मिले ये भी तो
कोई गम नहीं
मुझे बस मेरी मेहनत का
किया हुआ मिले..।

बिंदी 1 रुपये की आती है व ललाट पर लगायी जाती है।
पायल की कीमत हजारों में होती है पर पैरों में ही पहनी जाती है।
इन्सान आदरणीय अपने कर्म से होता है,
उसकी धन दौलत से नहीं !!

हर्ष शर्मा
सहायक महानिदेशक (एन.जी.एस.)

कविता...

# विज्ञान चालीसा

जय न्यूटन विज्ञान के आगर,
गति खोजत के भरि गये सागर।
ग्राहम् बेल फोन के दाता,
जनसंचार के भाग्य विधाता।
बल्ब प्रकाश खोज करि लीन्हा,
मित्र एडीशन परम प्रवीना।
बायल और चाल्स ने जाना,
ताप दाब सम्बन्ध पुराना।
नाभिक खोजि परम गतिशीला,
रदरफोर्ड हैं अतिगुणशीला।
खोज करत जब थके टामसन,
तबहिं भये इलेक्ट्रान के दर्शन।
जबहिं देखि न्यूट्रॉन को पाए,
जेम्स चैडविक अति हरषाये।
भेद रेडियम करत बखाना,
मैडम क्यूरी परम सुजाना।
बने कार्बनिक दैव शक्ति से,
बर्जीलियस के शुद्ध कथन से।
बनी यूरिया जब वोहलर से,
सभी कार्बनिक जन्म यहीं से।
जान डाल्टन के गूँजे स्वर,
आशिंक दाब के योग बराबर।
जय जय जय द्विचक्रवाहिनी,
मैकमिलन की भुजा दाहिनी।
सिलने हेतु शक्ति के दाता,
एलियास हैं भाग्यविधाता।
सत्य कहूँ यह सुन्दर वचना,
ल्यूवेन हुक की है यह रचना।
कोटि सहस्र गुना सब दीखे,
सूक्ष्म बाल भी दण्ड सरीखे।
देखहिं देखि कार्क के अन्दर,
खोज कोशिका है अति सुन्दर।
काया की जिससे भयी रचना,
राबर्ट हुक का था यह सपना
टेलिस्कोप का नाम है प्यारा,
मुट्ठी में ब्रह्मांड है सारा।
गैलिलियो ने ऐसा जाना,
आविष्कार परम पुराना।
विधुत है चुम्बक की दाता,
सुंदर कथन मनहिं हर्षाता।
पर चुम्बक से विद्युत आई,
ओर्स्टेड की कठिन कमाई।
ओम नियम की कथा सुहाती,
धारा विभव है समानुपाती।
एहि सन् उदगम करै विरोधा,
लेन्ज नियम अति परम प्रबोधा।
चुम्बक विद्युत देखि प्रसंगा,
फैराडे मन उदित तरंगा।
धारा उदगम फिरि मन मोहे,
मान निगेटिव फ्लक्स के होवे।
जय जगदीश सबहिं को साजे,
वायरलेस अब हस्त बिराजै।
अलेक्जेंडर फ्लेमिंग आए,
पैनिसिलिन से घाव भराये।
आनुवांशिक का यह दान,
कर लो मेण्डल का सम्मान।
डॉ रागंजन सुनहु प्रसंगा,
एक्स किरण की उज्जवल गंगा।
मैक्स प्लांक के सुन्दर वचना,
क्वाण्टम अंक उन्हीं की रचना।
फ्रैंकलिन की अजब कहानी ,
देखि पतंग प्रकृति हरषानी।
डार्विन ने यह रीति बनाई,
सरल जीव से सृष्टि रचाई।
परि प्रकाश फोटान जो धाये,
आइंस्टीन देखि हरषाए।
षष्ठ भुजा में बेंजीन आई,
लगी केकुले को सुखदाई।
देखि रेडियो मारकोनी का,
मन उमंग से भरा सभी का।
कृत्रिम जीन का तोहफा लैके,
हरगोविंद खुराना आए।
ऊर्जा की परमाणु इकाई,
डॉ भाभा के मन भाई।
थामस ग्राहम अति विख्याता,
गैसों के विसरण के ज्ञाता।
जो यह पढ़े विज्ञान चालीसा,
देइ उसे विज्ञान आशीषा।

संकलन कर्ता
अमर दीप
कनिष्ठ अनुवादक (एन.जी.एस.)

संकलन...

# प्रसन्न रहने के गुर

- सदैव प्रसन्न रहना संभव है, यदि हम दुःख से शिक्षा लेना सीख लें या कम से कम मन को शांत करने की तकनीक सीख लें।
- हम सब खुश रहना चाहते हैं। दुखी कोई नहीं रहना चाहता।
- मेहनत के अनुसार फल प्राप्त करके आराम से हर व्यक्ति खुश हो जाता है।
- खुशी हमारी अपनी सोच और कर्म पर निर्भर करती है।
- हम यदि भूत की दुखद यादों को भुला दें, भविष्य की चिंता न करें और वर्तमान को भरपूर जीयें तो हमारी खुश रहने की संभावनाएं बढ़ जाएंगी।
- दिन में सबसे पहले महत्वपूर्ण और तुरंत करने वाले कार्य पहले करें, जो कार्य महत्वपूर्ण नहीं हैं उनमें अपना समय नष्ट न करें।
- जिस प्रकार एक सफल व्यापारी कुछ पैसा लगाकर ज्यादा पैसा कमाता हैं, उसी प्रकार यदि हम जीवन में कुछ मेहनत करके अनुकूल फल पाने की खुशी चाहते हैं तो हमें शुरुआत में मेहनत करने में जो कष्ट होगा उसे सहना ही होगा।
- किसी भी प्रयास में निरंतरता का होना अति आवश्यक है।
- यह समझना अति आवश्यक है कि उच्च स्तर की खुशी प्राप्त करने के लिए निम्न स्तर की खुशी का त्याग आवश्यक है। उदाहरण के रुप में अच्छे स्वास्थ्य की खुशी के लिए स्वादिष्ट परंतु हानिकारक भोजन का त्याग करना ही होगा। ऐसा अपनी इच्छाशक्ति को बलशाली बनाने में संभव होगा। काम को टालने से जो उस समय आंनद आता है वो जब काम सिर पर आ जाता है, उस समय के तनाव से कहीं कम होता है।
- जैसे गीता में कहा गया है–कर्म पर ध्यान देने से और फल की चिंता न करने से भी हम अनावश्यक तनाव से बच सकते हैं।
- जो अच्छी बातें हम जानते हैं, उन पर अमल करें।

**संकलन कर्ता**
**राकेश मिश्रा**
स्टोर सहायक (अनुबंधित)

कविता...

## मां की महिमा

मां होती है निश्छल,
उसके मन में ना होता कोई छल।
देख हमें फैला देती आँचल।।

जिन्दगी की इस कठिन राह पर।
उसका आशीर्वाद होता सिर पर।
देती हमें प्यार की अद्भुत छाया।।
दुनिया में वो कहीं ना मिल पाया।

मां की ममता ऐसी
धरती पर ना देखी वैसी
पूत कपूत सुनें हैं हमने,
ना माता सुनी कुमाता

मां का मन है ऐसा
ना मिल पाये वैसा
देखकर हमें कभी दुःखी
देती खुशियों की पिटारी नई

इस मतलबी दुनिया में,
उसके रुप है अनेक
पर है इस दुनिया में,
वो केवल एक।

आरती
एम.टी.एस. (टी.डब्ल्यू.ए.)

## सुविचार

दिल में खोट जुबां से प्यार करते हैं।
बहुत से लोग दुनियां में बस यही व्यापार करते हैं...।

पहले मैं होशियार थी इसलिए दुनियां बदलने चली थी,
आज मैं समझदार हूँ, इसलिए खुद को बदल रही हूँ.....।

बेहतरीन इंसान अपनी मीठी जुबान से ही जाना जाता है,
वरना अच्छी बातें तो दीवारों पर भी लिखी होती है....।

जिसके पास उम्मीद हैं, वो लाख बार हार के भी, नहीं हार सकता....।
बादाम खाने से उतनी अक्ल नहीं आती, जितनी धोखा खाने से आती है...।

इस कलयुग में रूपया चाहे कितना भी गिर जाए,
उतना कभी नहीं गिर पायेगा, जितना रूपये के लिए इंसान गिर चुका है,.....।

बेकसूर कौन होता है इस ज़माने में,
बस सबके गुनाह पता नही चलते....।

सिर्फ उसे ही अपनी सम्पत्ति समझें जिसे
आपने अपने परिश्रम से कमाया हो....।

शाहिन
एम.टी.एस. (प्रशासन)
(अनुबंधित)

रोचक जानकारी...

## क्या आपको पता है?

1. चीनी को जब चोट पर लगाया जाता है, दर्द तुंरत कम हो जाता है।
2. जरूरत से ज्यादा टेंशन आपके दिमाग को कुछ समय के लिए बंद कर सकती है।
3. 92% लोग सिर्फ हंस देते हैं जब उन्हें सामने वाले की बात समझ नहीं आती।
4. बतख अपने आधे दिमाग को सुला सकती है जबकि उनका आधा दिमाग जगा रहता है।
5. कोई भी अपने आप को सांस रोककर नहीं मार सकता।
6. स्टडी के अनुसार होशियार लोग ज्यादातर अपने आप से बातें करते हैं।
7. सुबह एक कप चाय की बजाय एक गिलास ठंडा पानी आपकी नींद जल्दी खोल देता है।
8. जुराब पहन कर सोने वाले लोग रात को बहुत कम बार जागते हैं या बिल्कुल नही जागते।
9. फेसबुक बनाने वाले मार्क जुकरबर्ग के पास कोई कालेज डिग्री नहीं है।
10. आपका दिमाग एक भी चेहरा अपने आप नहीं बना सकता, आप जो भी चेहरे सपनों में देखते हैं वो जिदंगी में कभी ना कभी आपके द्वारा देखे जा चुके होते हैं।
11. अगर कोई आप की तरफ घूर रहा हो तो आपको खुद एहसास हो जाता है चाहे आप नींद में ही क्यों ना हो।
12. दुनिया में सबसे ज्यादा प्रयोग किया जाने वाला पासवर्ड 123456 है।
13. 85% लोग सोने से पहले वह सब सोचते हैं जो वो अपनी जिंदगी में करना चाहते हैं।
14. खुश रहने वालों की बजाए परेशान रहने वाले लोग ज्यादा पैसे खर्च करते हैं।
15. माँ अपने बच्चे के भार का तकरीबन सही अदांजा लगा सकती है जबकि बाप उसकी लम्बाई का।
16. पढ़ना और सपने लेना हमारे दिमाग के अलग–अलग भागों की क्रिया है इसीलिए हम सपने में पढ़ नहीं पाते।
17. अगर एक चींटी का आकार एक आदमी के बराबर हो तो वो कार से दुगुनी तेजी से दौड़ेगी।
18. आप सोचना बंद नहीं कर सकते।
19. चींटीयाँ कभी नहीं सोती ।
20. हाथी ही एक ऐसा जानवर है जो कूद नहीं सकता ।
21. जीभ हमारे शरीर की सबसे मजबूत मासपेशी है
22. नील आर्मस्ट्रांग ने चन्द्रमा पर अपना बायां पॉव पहले रखा था उस समय उनका दिल 1 मिनट में 156 बार धड़क रहा था।
23. पृथ्वी के गुरूत्वाकर्षण बल के कारण पर्वतों का 15,000 मीटर से ऊँचा होना संभव नहीं है।
24. शहद हजारों सालों तक खराब नहीं होता।
25. समुद्री केकड़े का दिल उसके सिर में होता है।

26. कुछ कीड़े भोजन ना मिलने पर खुद को ही खा जाते हैं।
27. छींकते वक्त दिल की धड़कन 1 मिली सेकेंड के लिए रूक जाती है।
28. लगातार 11 दिन से अधिक जागना असंभव है।
29. हमारे शरीर में इतना लोहा होता है कि उससे 1 इंच लंबी कील बनाई जा सकती है।
30. बिल गेट्स 1 सेकेंड में करीब 12,000 रूपए कमाते हैं।
31. आपको कभी भी ये याद नहीं रहेगा कि आपका सपना कहां से शुरू हुआ था।
32. हर सेकेंड 100 बार आसमानी बिजली धरती पर गिरती है।
33. कंगारू उल्टा नहीं चल सकते।
34. इंटरनेट पर 80% ट्रैफिक सर्च इंजन से आती है।
35. एक गिलहरी की उम्र 9 साल होती है।
36. हमारे हर रोज 200 बाल झड़ते हैं।
37. हमारा बांया पांव हमारे दांये पांव से बड़ा होता है।
38. गिलहरी का एक दांत हमेशा बढ़ता रहता है।
39. दुनिया के 100 सबसे अमीर आदमी एक साल में इतना कमा लेते हैं जिससे दुनिया की गरीबी 4 बार खत्म की जा सकती है।
40. एक शुतुरमुर्ग की आँखे उसके दिमाग से बड़ी होती है।
41. चमगादड़ गुफा से निकलकर हमेशा बांई तरफ मुड़ती है।
42. ऊँट के दूध का दही नहीं बन सकता ।
43. एक कोकरोच सिर कटने के बाद भी कई दिन तक जीवित रह सकता है।
44. कोका कोला का असली रंग हरा था।
45. लाइटर का अविष्कार माचिस से पहले हुआ था।
46. रूपए कागज से नहीं बल्कि कपास से बनते है।
47. स्त्रियों की कमीज के बटन बांई तरफ जबकि पुरूषों की कमीज के बटन दाई तरफ होते हैं।
48. मनुष्य के दिमाग में 80% पानी होता है।
49. मनुष्य का खून 21 दिन तक स्टोर किया जा सकता है।
50. फिंगर प्रिंट की तरह मनुष्य की जीभ के निशान भी अलग–अलग होते हैं।

**पृथी सिंह**
स्टाफ़ कार चालक (टी.डब्ल्यू.ए.)

कहानी...

# सबसे बड़ा धन

एक व्यक्ति के पास काफ़ी धन–दौलत तथा पैतृक सम्पत्ति थी। उस व्यक्ति को इस बात का गर्व भी था। अचानक एक दिन उसने हिसाब किया तो पता चला कि वह सम्पत्ति उसके और उसके बच्चों के लिए तो पर्याप्त होगी, लेकिन उनके बच्चों के भरण–पोषण के लिए काफ़ी नहीं है। मन में यह विचार आते ही वह भारी चिन्ता में पड़ गया। संयोगवश उन्हीं दिनों उस नगर में एक महात्मा जी आए हुए थे, जो हर व्यक्ति की इच्छा पूरी करते थे। जब यह बात उस व्यक्ति ने सुनी तो वह भी महात्मा जी के पास गया और बोला, 'महाराज! मुझे इतनी सम्पत्ति चाहिए कि मेरे बच्चों के बच्चों के बच्चे भी भोगें तो कभी समाप्त न हो'। महात्मा जी बोले, 'ऐसा ही होगा। तुम्हारे घर के पास ही टूटी सी झोंपड़ी में एक सास–बहू रहती है। कल उन्हें एक दिन का भोजन दे आना। तुम्हारी इच्छा पूरी हो जाएगी।'

फिर क्या था, अगले दिन वह चावल, आटा, दाल आदि लेकर उस झोंपड़ी पर पहुँचा, जहाँ सास बहू ध्यानमग्न थी। उसने बहू से कहा, 'यह लो! तुम्हारे लिए आटा है और चावल, घी और नमक लाया हूँ।' वह बोली, हमें नहीं चाहिए यह समान। आज हमारे पास खाने के लिए है। हम अगले दिन के लिए इकट्ठा नहीं करेंगे। हमें प्रभु रोज़ खाने के लिए देते हैं'।

वह हैरान हुआ। उसने सोचा मैं अपने बच्चों के बच्चों की चिन्ता कर रहा था और ये लोग कल की भी चिन्ता नहीं कर रहे हैं। उस व्यक्ति की आँखें खुल गई और उसी समय से धन के पीछे भागना छोड़ दिया और अपने सादे जीवन से संतुष्ट रहने लगा।

राजेश कुमार मीना
आशुलिपिक (प्रशासन)

कविता...

## न ज़ाने आगे क्या होगा?

समय का चक्र चलता है, जीवन का रहस्य बढ़ता हैं,
हम हर पल असमंजस में रहते हैं न जाने क्या होगा?
परिश्रम पथ पर निकल पड़े हैं विफल होंगे या सफल,
ये सोच के चिंता करते हैं, न जाने आगे क्या होगा?
रोजगार की तलाश में, जब प्रतिक्षा समाप्त हुई,
जीविका का साधन जुड़ा जब तब उम्मीद और बढ़ी
लक्ष्य की धुन में फिर से चितिंत हुए और सोचा
न जाने आगे क्या होगा? खड़े हैं समुंदर की लहरों में,
देखने लहरों की तरंगी को धारा की छवि को देखकर,
दिल ने सोचा न जाने आगे क्या होगा?
न जाने आगे क्या होगा, नवजीवन में प्रवेश करें जब
डोली में बैठकर, बाबुल को छोड़ जब
आंसुओं के संग, ये सोचा करती है न जाने आगे क्या होगा?
जीवन की कठिन डगर को पार जब पहुंचे बुढ़ापे के साये में,
प्रस्थान युग से होगा, ये सोच के मन घबराता हैं,
न जाने आगे क्या होगा?
जीवन की इस राह में, प्रतिक्षण संघर्ष रहता है,
संस्कृति के इस सार में, गीता का उपदेश कहता है,
फल की चिंता मत करो, निरंतर अपना कर्म करो,
और यही सोच के आगे बढ़ो, कि सब अच्छा ही होगा

**पृथी सिंह**
स्टाफ़ कार चालक (टी.डब्ल्यू.ए.)

## तू लड़की है

तू मत बोल ऊँचा, तू लड़की है,
तू रो भी धीरे, तू लड़की हैं,
धर्म है तेरा सब सहते रहना,
ससुराल है घर आँगन तेरा,
यह जीवन तेरा नहीं, किसी और का है
मौत भी तेरी अपनी नहीं,
क्योंकि तू लड़की है।

जीवन को तुझे सिसकियों में है बिताना
मरना है तो हँस के मर
खोखली परम्पराओं को सिर पर ढोते हुए
सूली पर मुस्कराते हुए चढ़,
लड़की का जीवन केवल अभिशाप है
भारतीय जननी का केवल यही पाप है
तू लड़की है, हाँ–हाँ, तू लड़की है।

उस बच्ची के कानों में पड़े जब ये शब्द
हाहाकार करते हुए हृदय से उठे ये शब्द
लड़की होना मेरे लिए पाप है,
नहीं! शक्ति की पुंज हूँ मैं कमजोर नहीं
अगली कठिनाईयों के बीच
मैं रास्ता बना लूँगी
काँटों के बीच भी फूलों को उगा लूँगी
नारी कमज़ोर नहीं, हाँ हाँ मैं कमज़ोर नहीं
मुझ पर बंदिश लाख लगाइए
मगर मुझे गर्व है कि मैं एक
लड़की हूँ कितनी खुशकिस्मत हूँ
कि मैं एक लड़की हूँ।
सौभाग्यशालिनी हूँ–हाँ मैं एक लड़की हूँ।

**शाहिन**
एम.टी.एस. (प्रशासन)
(अनुबंधित)

कविता...

# स्वच्छ भारत

जहां जन्में गणमान्य सदाव्रत
आशीषों के तानों पे
आज उसी की गाण् है प्रिय.....
हर अधरों के वाणों पे.....
है वहां, निर्मल प्राण है बसता
जहां मानवता की लाली है
भारत वर्ष अब कहा....कहो....हे.....
हाँ...हाँ...स्वच्छता की बाली है.....
हाँ...स्वच्छता की बाली है.....1।।
स्वच्छ–श्वेत रंग सांवलां.....
छः ऋतुओं की मातामयी स्थल
चिड़ियों की झुड़मुट की डाली,
है अपना श्सय जन्ममयी मतवाली,
है इन्हें अब स्वच्छ बनाना,
हर पत्ता–पत्ता डाली–डाली.....
चलें इनके गलियों वसंती.....
स्वच्छ हवा मतवाली.....
आओ प्रण ले लें.....
हे पुत इनके.....मातृभमि को
स्वच्छ बनाने हैं.....
मातृभूमि को निर्मल करने
नीत नये अभियान चलाने हैं
नीत नये अभियान चलाने हैं.....2।।
हे आज के नवतारे.....
हे आज के राजदुलारे.....
वीरों की भूमि रही है.....
ये भारतवर्ष है....सदा हुंकार भरी है
पर आज कुछ नया कर्मबाण चलाना है.....
भारतवर्ष को स्वच्छ बनाना है.....
भारतवर्ष को स्वच्छ बनाना है.....।।
जहां जन्में हैं हम.....
इस मातृभूमि की गोद में
खेलें हर दम.....।
आज फिर हुंकार भरी है....।
आ जाओ मेरे वीर पुत्रों....
हर ओर अंधियार खड़ी है.....।।
कर्मवाण् अपने तरकश से चलाओ.....
हर ओर व्यक्तित्व उजाला फैलाओ.....
हम आज एक प्रण ले लें.....
भारत को ललाट पे उकेरे
हर कर्मयोगी की हो,
यही पुकार.....
आज हमारा भारत चढ़ चले उसपार
जहां न हो गंदी बयार.....
न हो कोई कुड़ा–कचरे से,
भरा संसार.....
स्वच्छता का अभियान
ये ले लें हम.....
हर ओर पुकार हो,
भारत को स्वच्छ रखेगें हम..... 3।।
कोई न आज तक, इस पथ पे आया
है.....।
फिर न सतरंगी मौसम पाया है.....
ऐसी न कभी वसंती चली,
खुशबु न चंदन की शीतल कहीं भली.....
वैसा अपना देश श्यामला
शुभ्र–ज्योत्सना पुष्पमाला.....
हिमगिरि – हिमछादित मुकुट जिसके.....
कलरव करते झरनों की माला.....
फिर न इसे मैले से पाटेंगें.....
हर ओर स्वच्छ लहर बाटेंगें,
आयें अब स्वच्छ त्योहार मनायें.....।
खुशियां स्वच्छता कलरव गाएं.....
आज हर ओर स्वच्छता की किरणें
गुजेंगी.....
मन–भाव विभारे चहुंओर.....
स्वच्छता भारतवर्ष की देख हो उठेंगी.....
आओ.....
नीत नये अभियान चलाएं,
नीत नये अभियान चलाने है.....
भारत को स्वच्छ बनाना है.....
भारत वर्ष को स्वच्छ बनाना है.....4।।
अह्वान है नव–निहालों से.....
नवतरु....ताल, तलैया, रक्षक जीवन के
आओ सीचें इन्हें कर्म प्यालों से
हर ओर हो हरियाली हरामयी.....
छाया–ठंढ़क तरु–तालों से
नये–नये बाग–बगीचे हों अब
न हो कचड़े की ठोंगा.....
सोंधी–सोंधी स्वच्छ मिट्टी की
गंध आये हर चौपालों में,
छाया के तले पीपल आये.....
और आये कदम का पेड़.....

ताल–तलैया नाचे गाए
खुशी मनायें लोक बाग अब
स्वच्छ जीवन की वैभव में.....
नीत नये अभियान चलाएं.....
नीत नये अभियान चलाने हैं.....
भारत वर्ष को स्वच्छ बनाने हैं.....5।।
पेड़ लगाएं बाग लगाएं.....
और बुहारें गांव गलीं.....
घर–घर शौचालय बनाएं.....
कुड़ेदान हो जहां–तहां खड़ी.....
पाठशाला को स्वच्छ बनाएं.....
और बनाएं..... पंचायत हम.....
साथ....मनाएं अभियाण चलायें.....
स्वच्छ बनाएं भारत हम.....
नीत नये अभियान चलाएं
नीत नये अभियान चलाएं हम
नीत नये अभियान चलाने हैं.....
नीत नये अभियान चलाने हैं.....6।।
नीत नये अभियान चलाने हैं.....
अगर चौपालों पे.....
हो जाये पीपल की छांव.....
मन–मस्तिष्क तृप्त हो जाये.....
मिल जाएं धूप में छांव.....
हर ओर हो खुली हवा.....
फिर न लेनी होगी दवा.....
हर प्राणी होंगे स्वस्थ्य
न रहेगी आसपास गंदगी और
धूल कचड़े की गस्त.....
आओ आज हम साथ चलें.....

हाथों में लेकर हाथ चलें.....
स्वच्छता की नारा बांचें
अभियानों के कर्मों से सांचे....
नीत नये अभियान चलाना है.....
भारत वर्ष को स्वच्छ बनाना है.....
भारत वर्ष को स्वच्छ बनाना है.....7।।
महापुरुषों की कर्मभूमि यह.....
वीरपुतों की कुरुक्षेत्र.....
तरकश की तान मिट्टीशेष.....
कर्म की गाथा कहती.....
विवेकधर्म की माया नगरी.....
सदियों से यह गुरुत्तव की पूजा रचती.
भारत तो है.....खान गौरव का
स्वच्छता की अभियान गौरव का
शीतल बयार से पलवित भूमि
आज मुक्त होगी कचड़े से....
आज दिवस हम प्रण कर लें....
न होगी फिर यहां गंदगी.....
अभियान आज चला लें हम.....
नीत नये प्रण कर लें हम.....
राष्ट्रनेताओं ने आह्वान किया.....
भारत को प्रणाम् किया.....
एक–दुसरे को थाम चलें.....
भारत को प्रणाम चलें.....
नीत नये आह्वान चलायें हम.....
जहां मानवता की लाली है.....
भारतवर्ष कहा कहो...हे....
हाँ...हाँ...स्वच्छता की बाली है.....
हाँ...स्वच्छता की बाली है.....।

आओ प्रण ले लें.....
हे पुत! इनके मातृभूमि को स्वच्छ
बनाने हैं
नीत नये अभियान चलाने हैं.....
भारत को स्वच्छ बनाने हैं.....
मातृभूमि को निर्मल करने.....
नीत नये अभियान चलाने हैं.....
नीत नये अभियान चलाने हैं.....
भारत को स्वच्छ बनाने हैं.....
अगर चले शीतल बयार.....
आओ लगाएं पौधे....बाड़.....
हर ओर हो पौधों की भरमार.....
कुड़ेदान में फेकें खरपतवार.....
झाड़ु–झड़नी से करें प्यार.....
तब जाकर लाएगें स्वच्छ बयार.....
शीतल वर्षा.....जलधार.....
स्वच्छ भारत का यहीं नारा है.....
नीत नये चलाएं अभियान
भारत को स्वच्छ बनाना है.....
भारत को स्वच्छ बनाना है.....
नीत नये अभियान चलाएं.....
नीत नये अभियान चलाने है.....
नीत नये अभियान चलाने हैं.....
भारत को स्वच्छ बनाना है.....
भारत को स्वच्छ बनाना है.....

**निर्भय कुमार मिश्रा**
आशुलिपिक (आई.टी.)

# स्टार्ट अप इंडिया

मेक इन इंडिया के बाद केंद्र सरकार ने देश की अर्थव्यवस्था और लोगों के लिए रोजगार सृजन करने हेतु स्टार्ट अप इंडिया स्कीम को लाँच किया है। इस स्कीम के अंतर्गत उन लोगों को खास तोहफा दिया गया है जो अपना व्यवसाय शुरू करना चाहते हैं। यह प्रोजेक्ट प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का महत्वाकांक्षी प्रोजेक्ट है। इसे लाँच करते वक्त प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमारी सरकार स्टार्ट अप को प्राथमिकता के साथ शुरू करने जा रही है और इस कैंपेन को प्राथमिकता देंगे। आईए हम आपको बताते हैं कि क्या है स्टार्टअप इंडिया स्कीम और इसका देश के विकास पर क्या असर पड़ा है एवं भविष्य में कैसा असर पड़ेगा।

**वर्ष 2015 के प्रसिद्ध स्टार्ट अपः** साल 2015 में भी कई ऐसे स्टार्टअप शुरू हुए जिन्होंने खासी प्रसिद्धि पाई। जिनमें क्राउड फायर, प्राइस बाबा, रिक्रूटमेंट एप 'सुपर' और विजरॉकेट शामिल है। बताते चले कि क्राउडफायर ट्विटर व इंस्टाग्राम का फ्रैंड मैनेजमेंट एप है। इसके जरिए इंटरप्राइजेस अपने असक्रिय फॉलोअर्स को ट्विटर पर देख सकते हैं। यह कई सेवाएं देता है, जिसके दुनिया में 80 लाख उपभोक्ता हैं। कंपनी की आमदनी 6 करोड़ रु. को पार कर चुकी है।

**स्टार्ट अप के लिए फंड की व्यवस्थाः** एक स्टार्टअप के लिए अगर फंड की कमी है तो उसकी भी व्यवस्था हो जाती है। जब अपनी पूंजी व बैंक लोन की औपचारिकता पूरी हो जाती हैं तो कंपनी लॉ के तहत रजिस्ट्रेशन हो जाता है। इसके बाद मंत्रालय गाइडलाइन के मुताबिक लघु, छोटे व मध्यम एंटरप्राइजेज से अप्रूवल लेना होता है। ये सब करने के बाद 1 करोड़ रु. तक का लोन बिना कुछ गिरवी रखे मिल सकेगा। एक स्टार्टअप शुरू करने के लिए अपना प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार रखना होगा एवं उत्पाद के लिए पर्यावरण व श्रम मंत्रालय से एनओसी भी लेना होगा। इतना कुछ करने के बाद अगर अपने स्टार्ट अप में थोड़ी सी भी सफलता मिली तो विदेशी निवेशक या वेंचर कैपिटलिस्ट मिल जाते हैं।

**स्टार्ट अप के लिए मिलने वाली मददः** स्टार्टअप शुरू करने के लिए देश में कई जगहों से मदद भी मिल सकती है जिसमें इंडियन एंजिल नेटवर्क इनक्यूबेटर शामिल है। यह भारत सरकार के डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी का एंटरप्रिन्योशिप कार्यक्रम है। यहां बेहतरीन आइडिया मिलने पर किसी भी वेंचर को 18–24 माह तक इनक्यूबेट किया जाता है।

वहीं टेक्नोलॉजी बिजनेस इनक्यूबेटर से आपको आईआईटी दिल्ली द्वारा केवल तकनीकी कारोबार को बढ़ाने में मदद दी जाती है। आईआईटी किसी भी अच्छे बिजनेस आइडिया को वेंचर कैपिटलिस्ट की मदद से आगे बढ़ाती है। स्टार्टअप में आपकी मदद टीलैब्स भी कर सकता है जो टाइम्स इंटरनेट लिमिटेड का एसेलेरेटर है जो 10 फीसदी हिस्सेदारी के बदले 10 लाख रुपए तक फंड करता है।

**स्टार्ट अप की चुनौतियाँः** लेकिन इतना कुछ होने के बाद भी एक स्टार्ट अप के सामने कई विफलताए हैं। फार्च्यून

द्वारा किए गए एक सर्वे में स्टार्ट अप की विफलता के कारण गिनाए गए हैं। इस सर्वे के मुताबिक 100 में से 90 स्टार्ट अप विफल रहते हैं, वहीं 42 फीसदी स्टार्ट अप ऐसे होते हैं जिनके प्रोडक्ट की बाजार में जरूरत ही नहीं थी। इन विफलताओं के बावजूद भी भारत में स्टार्ट अप के हालात बेहतर हैं।

**स्टार्ट–अप के मामले में विश्व बाजार में भारत की स्थितिः** भारत अब व्यवसाय करने के नजरिए से दुनिया के चुनिंदा देशों में शामिल होने की ओर है। इस दौर में कई ऐसी कंपनियां भी हैं जो विदेशों को छोड़कर भारत आ रही हैं। बता दें कि ट्विटर जिपडॉयल के फाउंडर वेलरी वेगनर ने अमेरिका छोड़कर भारत में काम शुरू किया। वहीं जूमकार के को–फाउंडर ग्रेग मोरान ने जानी–मानी सिलिकॉन वैली को छोड़ कर, अपना कारोबार बंगलूरू में शुरू किया। यही नहीं कुल विदेशी कंपनियों मे से 45 फीसदी कंपनियां ऐसी भी हैं जो भारत में 10 फीसद का स्टार्ट अप डाल देते है।

**साल–दर–साल बढ़ता ग्राफः** भारत में स्टार्ट अप का ग्राफ साल दर साल बढ़ता जा रहा है। साल 2010 में देश में जहां मात्र 480 स्टार्ट अप थे वहीं 2011 में यह संख्या बढ़कर 525 हो गई थी। 2012 में 65 स्टार्ट अप का इजाफा हुआ, जिसके बाद कुल 590 स्टार्ट अप हो गए। 2013 के भीतर भारत में स्टार्ट अप की संख्या 680 हो गई। 2014 में जहां स्टार्ट अप की संख्या 805 तक पहुंच गई वहीं इसकी मदद से 65,000 लोगों को रोजगार मिला। 2015 में स्टार्ट अप की संख्या बढ़कर 1200 हो गई जिसके माध्यम से 80,000 लोगों को रोजगार मिला। वहीं नैस्कॉम का मानना है कि 2020 तक 11,500 स्टार्ट अप शुरू होंगे। स्टार्ट अप के जरिए भारत ने 240 करोड़ डॉलर की फंडिंग आकर्षित की है।

संकलनकर्ता
**सुरुचि वर्मा**
कार्यालय सहायक (एफ.ए.)
(अनुबंधित)

| क्रं. सं. | वर्ष 2015–16 में सेवानिवृत होने वाले अधिकारियों/कर्मचारियों की सूची | |
|---|---|---|
| 1. | श्री अजय कुमार मित्तल | वरिष्ठ उप महानिदेशक (टी.ई.सी.) |
| 2. | श्री डी.के. गुप्ता | उप महानिदेशक |
| 3. | श्री एस.के. तनेजा | उप महानिदेशक |
| 4. | श्री ए.के. दास | वरिष्ठ उप महानिदेशक एवं उप महानिदेशक (एन.आर.) |
| 5. | श्री सालिग राम | सहायक |
| 6. | श्री मांगे राम | एम.टी.एस. |
| 7. | श्रीमती सुमन शर्मा | एम.टी.एस. |

कविता...

# स्वच्छ भारत

स्वतः अंर्तआत्मा को जगाना है,
कुंभकरण की तर्क को उठाना है,
मन की व्यथा को छकाना है,
और भारत को स्वच्छ बनाना है।।

बच्चों को सच्चाई सिखाना है,
सही और गलत में फर्क बताना है,
जीने का सही लक्ष्य जताना है,
और भारत को स्वच्छ बनाना है।।

नौजवानों और प्रौढों को खुद समझना होगा
वायु, जल और धरती, और की अमानत है मानना होगा
अगली पीढ़ी के वास्ते, बहुत–कुछ छोड़ना होगा
और भारत को स्वच्छ बनाना होगा।।

क्या खोया और क्या पाया, बुजुर्गो ने कभी सोचा होगा
जीवन के इस मुकाम पर शायद, पर्यावरण के लिए भी कुछ किया होगा
इस चकाचौंध में भी, हवा और पानी के लिए, कुछ संजोया होगा
और स्वच्छ भारत मिशन की पीठ को थपथपाया होगा ।।

धरती और वातावरण हमनें पूर्वजों से पाया है
कुछ साफ–सुधरा करके, इन्हें बच्चों को देकर जाना है
पेड़– पौधों को खूब लगाना है
उन्हें सींचना और बढाना है
अपने गिले– शिकवे और कड़वाहट को हटाना हैं
और अंततः स्वच्छ भारत बनाना हैं।

**मनीष रंजन**
सहायक महानिदेशक (आई.टी.)

लेख...

# महान प्रेरणा स्रोत – स्वामी विवेकानंद

भारतीय संस्कृति को विश्व स्तर पर पहचान दिलाने वाले महापुरुष स्वामी विवेकानंद जी का जन्म 12 जनवरी 1863 को सूर्योदय से 6 मिनट पूर्व 6 बजकर 33 मिनट 33 सेकेन्ड पर हुआ। भुवनेश्वरी देवी के विश्वविजयी पुत्र का स्वागत मंगल शंख बजाकर मंगल ध्वनि से किया गया। ऐसी महान विभूती के जन्म से भारत माता भी गौरवान्वित हुई।

बालक की आकृति एवं रूप बहुत कुछ उनके सन्यासी पितामह दुर्गादास की तरह था। परिवार के लोगों ने बालक का नाम दुर्गादास रखने की इच्छा प्रकट की, किन्तु माता द्वारा देखे स्वप्न के आधार पर बालक का नाम वीरेश्वर रखा गया। प्यार से लोग 'बिले' कह कर बुलाते थे। हिन्दू मान्यता के अनुसार संतान के दो नाम होते हैं, एक राशी का एवं दूसरा जन साधारण में प्रचलित नाम, तो अन्नप्रासन के शुभ अवसर पर बालक का नाम नरेन्द्र नाथ रखा गया।

नरेन्द्र की बुद्धि बचपन से ही तेज थी। बचपन में नरेन्द्र बहुत नटखट थे। भय, फटकार या धमकी का असर उन पर नहीं होता था। तो माता भुवनेश्वरी देवी ने अदभुत उपाय सोचा, नरेन्द्र का अशिष्ट आचरण जब बढ जाता तो, वो शिव शिव कह कर उनके ऊपर जल डाल देतीं। बालक नरेन्द्र एकदम शान्त हो जाते। इसमें संदेह नहीं कि बालक नरेन्द्र शिव का ही रूप थे।

माँ के मुहँ से रामायण महाभारत के किस्से सुनना, नरेन्द्र को बहुत अच्छा लगता था। बाल अवस्था में नरेन्द्र नाथ को गाड़ी पर घूमना बहुत पसन्द था। जब कोई पूछता बडे हो कर क्या बनोगे तो मासूमियत से कहते कोचवान बनूँगा।

पाश्चात्य सभ्यता में विश्वास रखने वाले पिता विश्वनाथ दत्त अपने पुत्र को अंग्रेजी शिक्षा देकर पाश्चात्य सभ्यता में रंगना चाहते थे। किन्तु नियती ने तो कुछ खास प्रयोजन हेतु बालक को अवतरित किया था।

ये कहना अतिश्योक्ति न होगा कि भारतीय संस्कृती को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने का श्रेय अगर किसी को जाता है तो वो हैं स्वामी विवेकानंद। व्यायाम, कुश्ती, क्रिकेट आदि में नरेन्द्र की विशेष रूची थी। कभी–कभी मित्रों के साथ हास–परिहास में भी भाग लेते। जनरल असेम्बली कॉलेज के अध्यक्ष विलयम हेस्टी का कहना था कि नरेन्द्रनाथ दर्शन शास्त्र के अतिउत्तम छात्र थे। जर्मनी और इग्लैण्ड के सारे विश्वविद्यालयों में नरेन्द्रनाथ जैसा मेधावी छात्र नहीं था।

नरेन्द्र के चरित्र में जो भी महान है, वो उनकी सुशिक्षित एवं विचारशील माता की शिक्षा का ही परिणाम है। बचपन से ही परमात्मा को पाने की चाह थी। डेकार्ट का अंहवाद, डार्विन का विकासवाद, स्पेंसर के अद्वेतवाद को सुनकर नरेन्द्रनाथ सत्य को पाने का लिये व्याकुल हो गये। अपने इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु ब्रह्मसमाज में

गये किन्तु वहाँ उनका चित्त शान्त न हुआ। रामकृष्ण परमहंस की तारीफ सुनकर नरेन्द्र उनसे तर्क के उद्देश्य से उनके पास गये किन्तु उनके विचारों से प्रभावित हो कर उन्हे गुरू मान लिया। परमहंस की कृपा से उन्हें आत्म साक्षात्कार हुआ। नरेन्द्र परमहंस के प्रिय शिष्यों में सर्वोपरि थे। 25 वर्ष की उम्र में नरेन्द्र ने गेरुआ वस्त्र धारण कर सन्यास ले लिया और विश्व भ्रमण को निकल पड़े।

1893 में शिकागो विश्व धर्म परिषद में भारत के प्रतिनिधि बनकर गये किन्तु उस समय युरोप में भारतीयों को हीन दृष्टि से देखा जाता था। उगते सूरज को कौन रोक पाया है, वहाँ लोगों के विरोध के बावजूद, एक प्रोफेसर के प्रयास से स्वामी जी को बोलने का अवसर मिला। स्वामी जी ने बहनों एवं भाईयों कहकर श्रोताओं को संबोधित किया। स्वामी जी के मुख से ये शब्द सुनकर करतल ध्वनि से उनका स्वागत हुआ। श्रोता उनको मंत्र मुग्ध सुनते रहे, निर्धारित समय कब बीत गया पता ही न चला। अध्यक्ष गिबन्स के अनुरोध पर, स्वामी जी ने आगे बोलना शुरू किया तथा 20 मिनट से अधिक बोले। उनसे अभिभूत हो हजारों लोग उनके शिष्य बन गये। आलम ये था कि जब कभी सभा में शोर होता तो उन्हें स्वामी जी के भाषण सुनने का प्रलोभन दिया जाता सारी जनता शान्त हो जाती।

अपने व्याख्यान से स्वामी जी ने सिद्ध कर दिया कि हिन्दू धर्म भी श्रेष्ठ है, उसमें सभी धर्मों को समाहित करने की क्षमता है। इस अदभुत सन्यासी ने सात समंदर पार भारतीय संस्कृति की ध्वजा को फहराया।

स्वामी जी केवल संत ही नहीं देशभक्त, वक्ता, विचारक, लेखक एवं मानव प्रेमी थे। 1899 में कोलकता में भीषण प्लेग फैला, अस्वस्थ होने के बावजूद स्वामी जी ने तन मन धन से महामारी से ग्रसित लोगों की सहायता करके इंसानियत की मिसाल दी। स्वामी विवेकानंद ने, 1 मई, 1897 को रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। रामकृष्ण मिशन, दूसरों की सेवा और परोपकार को कर्मयोग मानता है जो कि हिन्दुत्व में प्रतिष्ठित एक महत्वपूर्ण सिद्धान्त है।

39 वर्ष के संक्षिप्त जीवन काल में, स्वामी जी ने जो अदभुत कार्य किये हैं, वो आने वाली पीढियों का मार्ग दर्शन करते रहेंगे। 4 जुलाई 1902 को स्वामी जी का अलौकिक शरीर परमात्मा में विलीन हो गया।

स्वामी जी का आदर्श– "उठो जागो और तब तक न रुको जब तक मंजिल प्राप्त न हो जाए" अनेक युवाओं के लिये प्रेरणा स्रोत है। स्वामी विवेकानंद जी का जन्मदिन राष्ट्रीय युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। उनकी शिक्षा में सर्वोपरि शिक्षा है "मानव सेवा ही ईश्वर सेवा है।"

सुमित रस्तोगी
डाटा मैनेजमेंट असिस्टेंट (टी.एस.ए.)
(अनुबंधित)

कविता...

## "आ"

मालिक है तू तो हक भी जताने के लिए आ
काबिज हैं हम तो कब्जा छुड़ाने के लिए आ
इख्लाक के ऊपर जो ये नफरत की है चादर
आ तू इसी चादर को हटाने के लिए आ
गीता में सबक तूने जो अर्जुन को सुनाए
आ, अब वही हम को भी सुनाने के लिए आ
हर राह में, हर मोड़ पे रावण ही खड़े हैं
तू आबरू सीता की बचाने के लिए आ
मयखाना ये तेरा है और हम सभी प्यासे हैं
गर साकी है तू, सब को पिलाने के लिए आ
औलाद से अपनी अब माँ बाप दुरूखी हैं
हर बेटे को श्रवण तू बनाने के लिए आ
तू आएगा, बढ़ जाएंगे जब पाप जमीं पर
वादा ये किया है तो निभाने के लिए आ
अब भाई जो भाई का बन बैठा है दुश्मन
तू प्यार भरत वाला दिखाने के लिए आ
लालच के हिरण घूमते फिरते हैं सुनहरे
सीता को भरम से तू बचाने के लिए आ
वो राह तेरी कब से यूँ ही देख रही है
अब बेर तू शबरी के खाने खाने के लिए आ
कितनी ही अहिल्याएं, पांचाली दुःखी हैं
उनकी ही तू अब लाज बचाने के लिए आ
गुलशन ये तेरा सारा ही अब सूख चला है
आ, प्यारे प्यारे फूल खिलाने के लिए आ
रुठा है तू, जायज है तेरा रूठना 'साहिल'
कुछ और नहीं, मान ही जाने के लिए आ

## इसलिये बेचैन हूँ.....

हो गया दुश्वार जीना इसलिये बेचैन हूँ
हल कोई मुश्किल हुई ना इसलिये बेचैन हूँ
नाखुदा चौकस, मुआफकि भी हवा लेकिन नदीम
है भँवर में ही सफीना इसलिये बेचैन हूँ
रोजो–शब होती तिलावत यूँ तो हर घर में मगर
है मकीं सीनों में कीना इसलिये बेचैन हूँ
आँख में पानी, शिकम में भूख भी दहकान के
और माथे पर पसीना इसलिये बेचैन हूँ
सख्त पहरा है कफस पे और जालिम उस पे फिर
ये बहारों का महीना इसलिये बेचैन हूँ
चाहिये मुझको बुलन्दी रातों–रात मगर कहीं
न नजर आया वो जीना इसलिये बेचैन हूँ
एक जानिब सरहदें हैं खूँ से लथपथ हर घड़ी
दूजी जानिब जामो–मीना इसलिये बेचैन हूँ
हर बड़े बूढ़े ने सिखलाया हमें 'साहिल' मगर
आया न हमको करीना इसलिये बेचैन हूँ

नाखुदाः मल्लाह, नदीमः दोस्त, सफीनाः नाव
तिलावतः धर्मग्रन्थों का पाठ, मकींः स्थित
कीनाः मनोमालिन्य, मनमुटाव, शिकमः पेट
दहकानः किसान, कफसः पिन्जरा, जेल
जीनाः सीढ़ी, करीनाः रहन–सहन का तरीका

रामचन्द्र वर्मा 'साहिल'
पूर्व सहायक महानिदेशक

कविता...

# वो सुबह ज़रूर आएगी

वो सुबह कभी तो आएगी,
जब हम एक होंगे,
ना कोई उच्च होगा और
ना कोई नीच होगा,
होंगे सब आपस में भाई–भाई,
जब खेतों में खुशियों क फसल
लहलाहायेंगे–
वो सुबह कभी तो आएगी !

वो सुबह कभी तो आएगी,
जब हम एक होंगे,
ना होगा कोइ दुश्मन अपना,
ना होगा आपस में द्वेश भावना–
ना होंगे कभी आपस में लड़ाई,
ना बनेगा कोई महिषासुर,
ना होगा कोई अब कसाई,
जब रहेंगे सब मिल जुलकर, तब–
खुशियों के गीत गुनगुनाएँगे–

वो सुबह कभी तो आएगी,
जब हम एक होंगे,
वो सुबह कभी तो आएगी,
जब हम एक होंगे,
ना होगी धार्मिक झंझट कहीं पे,
ना होगी संवेदनशील आहत कहीं पे–
ना होगा 90 का शासन 10 पर,
ना होंगे झूठे–वादे–भाषण–मंचपर,
होगी आजादी खुल के जीने का,
जब आजाद पंछी की तरह–
खुले आकाश मे –उड़के कह कहे लगाएँगे–

वो सुबह कभी तो आयेगी,
जब हम एक होंगे–
वो सुबह कभी तो आयेगी,
जब हम एक होंगे–
ना बिलखेंगे भूखे–नंगे बच्चे सड़क पे,
ना सूनी होगी ममता की आँचल–
ना लूटेगी माँ–बहनो की अस्मत–
ना कभी गरजेगा बिन बरसने वाला बादल–
मिटेगी जातिए भेद–भावना, जब–
सब एक साथ बारिश में मिलकर नहाएँगे–
वो सुबह कभी तो आएगी–
वो सुबह कभी तो आएगी–
जब हम एक होंगे–
होंगे सारे सपने साकार,
दुनिया को देंगे नयी आकार,
ना मरेंगे भूखे–नग्न–बिलखते बच्चे,
बनेगा मुहिम जब आत्मविश्वास होंगे सच्चे–
होगी एक जुटता ताकत हमारी, जब–
वैशाखी–क्रिसमस–ईद–दीवाली–साथ
मिलकर मनाएँगे–

वो सुबह कभी तो आएगी,
जब हम एक होंगे,
वो सुबह आएगीं और हम सब एक होंगे
जब,
मिटाएंगे अश्लीलता, समाज को देंगे नया
आयाम,
जनवाद–सुसंस्कृति का फैलाएँगे पयाम,
चुनेंगे हम सब नया 'विकल्प',
हम सब लेंगे अब नया 'संकल्प'–
खत्म करेंगे कुसंस्कृति– और–साम्राज्यवाद
को,
वो सुबह जरूर आएगी "प्रिय", जब–
खादी के वस्त्र पहने,
उन राक्षसों को अब हम सब मिलकर
भगाएंगे–

वो सुबह कभी तो आएगी,
जब हम एक होंगे,
ना कोई उच्च होगा और–
ना कोई नीच होगा–
ना बनेगा हिंदू–मुस्लिम–सिख–इसाई,
होंगे सब आपस में भाई–भाई,
अब खुशियों के चमन में फूल भी,गाने
गुनगुनाएँगे–
वो सुबह जरूर आएगी–जरूर आएगी–जरूर
आएगी !

**प्रियरंजन "प्रियम"**
**(भ्राता, श्री मनोरंजन,सहायक महानिदेशक)**
(एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

कविता...

# मंजिल

जीवन के इस पड़ाव पर,
उम्र के इस बहाव में,
कितने सारे प्रश्न के उत्तर नहीं पाता हूँ....
अनजानी–बेगानी राहों पर,
मैं, बस चलता जाता हूँ..
मैं, बस चलता जाता हूँ–

कुछ अनसुलझे हालात लिए,
जिंदगी से कुछ सौगात लिए,
कुछ अनकहे अल्फाज लिए,
कुछ बिगड़े हुए सुर लिए,
कुछ बिगड़े हुए साज लिए,
कुछ टूटे–बिखरे ख्वाब लिए,
कुछ अन समझे–अधूरे जज्बात लिए,
मिला ना मुझ को अंजाम,
उस अंजाम का आगाज लिए,
मैं बस चलता ही गया,
मैं, बस चलता ही गया....
अपनी मंजिल को ढूँढने,
अपने सपनों को हकीकत में पीरोने,
टूटे हुए सपनों को जोड़ने....
जिंदगी के अधूरेपन को भरने,
अपने टूटे हुए सपनों को जोड़ने,
बस चलता ही गया,
मैं बस चलता ही गया...
मैं, बस चलता हीं गया...
अकेले–अनजान राहों पर,
सुन सान राहों पर,
अन कहे–अन सुलझे पहलू को सुलझाने,
अपने मंजिल को पाने,
चलता ही गया.. चलता ही गया....
आज भी मुझे चाहत है,
अपने सपनों की....
मुझे जरूरत है, मेरे अपनों की..
आज भी मैं जा रहा हूँ..
अपने सपनों की खोज में....
अपने–अपनों की खोज में....
ना जाने किस मोड़ पर, अपने मिलजाए–
ना जाने किस मोड़ पर,
मेरे सारे सपने पूरे हो जाए...
आज भी मैं जी रहा हूँ....
अपने सपनों को हकीकत में,
पीरोने की कोशिश कर रहा हूँ !

**प्रियरंजन "प्रियम"**
**(भ्राता, श्री मनोरंजन,सहायक महानिदेशक)**
(एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

कविता...

# जीव निर्माणगाथा

देखो जीव द्रव्यों का मेल
नही हैं जीवन दैविक खेल
सतत संघर्षो का परिणाम
जीव– जन्म और नव निर्माण।

सूर्य, सितारे, इला व्योम में
बोलो–बोलो कैसे आये
पादप की छाया कैसे आयी
सर–सागर कैसे बन पाये?

"जगत की है रचना प्रमाणित"
डार्विन ने यह हमें बताया
"जीव विकास होता क्रमबद्ध"–
है इसे सिद्ध कर दिखलाया।

अद्भुत हुआ विशाल धमाका
बिग–बैंग जानो इसका नाम
लगे गैसीय पिंड छिटकने
शुरू हुआ संसार निर्माण।

गैसों के बादल मिलने से
लगा नभ में नेबुला बनने
गुरूत्वाधीन से लगे सिकुड़ने
सिकुड़ सिकुड़ कर गोला बनने।

नृत्य करते ने बुला नभ की
दाढ़ी में जी लगे मचलने
गुरूत्वा धीन गोला बनकर
लाल दिवाकर लगा दहकने।

नभ का आँगन धधक रहा था
हर क्षण शोलों के बनने से
असंख्य आकाशीय पिंड है
आगे अणुओं के जलने से।
मंगल, बुध, प्लूटो, यूरेनस
बृहस्पति, शुक्र, शनि की सूरत
नवग्रह मिलजुल नभ में नाचे
नेपटयून और धरा की सूरत।

धरती की छाती डोल उठी
लगी ज्वालामुखी अब फूटने
प्यारी वसुधा की गोदी में
भूधर– गद्दबर लगे मचलने।

कार्बन डाई–ऑकसाईड था
पृथ्वी के अंतरतर में जब
जल मीथेन के बर्फ जमे थे
अमोनिया भी अंदर में तब।

लगे अब ये पदार्थ पिघलने
उच्च ताप सूरज का पाकर
आने लगे तरल बनकर वे
धरती के अंदर से बाहर।

सूरज के अति उच्च ताप से
तरल गैस में लगा बदलने
बारिश होने लगी धरा पर
जीव समुद्र में लगे मचलने।

जग है अद्भुत रचना इसको
मत समझो देव की माया
जीवों का संघर्ष है दुनिया
नियम प्रकृति का बना बनाया।

एमीनो–एसीड जीवों में
देखो मूलतः है विद्यमान
कार्बन और हाइड्रोजन मिलकर
कर देते इसका निर्माण।
कार्बन और हाइड्रोजन के
अणु जगत के आदि से आये
ऑक्सीजन के रहते में, पर
ये एसिड कैसे बन पाये ?

ऑक्सीजन नहीं था जगत में
उरे – मिलकर ने हमें बताया
ऑक्सीजन रहित परिवेश से
जैव – अणु बनाकर दिखलाया।

रासायनिक क्रियाओं का जब
चलने लगा जी, खेल समुद्री
कार्बन और हाइड्रोजन का
होने लगा जी, मेल समुद्री।

सी और एच–टू मिलने से
एमीनो एसिड बनता है।
जो मिलजुल प्रोटीन बनाते
जीवन इसी से चलता है।

तीन तरह के अणु मिलकर
है न्यूक्लि पोटाइड बनाते
डी एन ए है बनता इससे
जो जीवों का वंश चलाते।

अणुओं से ही बना जीव है
मत समझों ईश्वर की माया
जानो प्यारे ज्ञान की बातें
नियम जगत का बना बनाया।

**मनोरंजन**
सहायक महानिदेशक
(एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.)

विचार...

# जीवन शैली प्रबंधन

अभी हाल ही में दिनांक 11 मार्च से 13 मार्च 2016 तक दिल्ली में ''आर्ट ऑफ लिविंग संस्था ने विश्व सांस्कृतिक महोत्सव मनाया । इस उत्सव में देश विदेश के कलाकार व गणमान्य लोंगों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया, इस उत्सव का मुख्य भाव ''वसुधैव कुटुम्बकम'' पर आधारित था। वसुधैव कुटुम्बकम'' अर्थात हमारी वसुधा में रहने वाले सभी प्राणी एक ही परिवार का हिस्सा है। सम्पूर्ण धरा एक है और इसके वासी एक ही परिवार है। यह सुनने और पढ़ने में मधुर संगीत या वेदों की ऋचा जैसा मधुर आभास देता है। पर क्या हम सचमुच ''वसुधैव कुटुम्बकम'' को मानते है?

हर सुबह जब हम समाचार पत्र खोलते है तो यह विभिन्न प्रकार की खबरों से भरा होता है। मुख्य पन्ना लूटमार डकैती, हत्या, षडयंत्र जालसाजी व राजनैतिक झगड़ों की ही खबरों से ओत प्रोत होता है। अब प्रश्न यह है कि यदि हम सब एक ही धरा के परिवार का अंग हैं तो यह सब क्यों? क्या हम सब यह भूल गए हैं कि परिवार में सभी को मिल जुल, एक दूसरे की भावनाओं का सम्मान करते हुए रहना चाहिए। ये प्रश्न जितने महत्वपूर्ण है। उनके उत्तर उतने ही गूढ़ हैं।

ऐसा नहीं है कि प्राचीन काल में लोग युद्ध नहीं करते थे। कई राजा महाराजाओं के शौर्य पराक्रम व युद्ध कौशल की कहानियों से हमारा इतिहास व धार्मिक पुराण भरे हुए हैं। हमारे दो प्रमुख महाग्रंथ रामायण व महाभारत भी इन्हीं गाथाओं से ओत प्रोत हैं। परन्तु उन सबके बाद भी हमारे संस्कार 'वसुधैव कुटुम्बकम', 'अतिथि देवो भव', सर्व कल्याणं सर्व शुभम की विचारधारा से प्रभावित रहे हैं। इतिहास गवाह है कि किस तरह सम्राट अशोक कलिंग युद्ध जीतने के पश्चात खुद की हार का अनुभव कर रहे थे। क्योंकि शांति हमेशा युद्ध पर भारी है।

आज का भारतीय समाज लगातार इस दुविधा में है कि पाश्चात्य जीवन शैली अपना कर सामाजिक व्यवस्था से ऊपर उठे या अपनी सामाजिक संस्कृति का पालन करें। आज की उपभोग जनित अर्थव्यवस्था ज्यादा से ज्यादा भौतिक उपभोग को स्वीकारती है और बढ़ावा देती है। यह व्यवस्था भारतीय संस्कृति की योग परंपरा के विपरीत है। हमारा समाज इन्ही विरोधाभासों के बीच फंसा हुआ है।

भौतिक साधन जीवन को सरल व सुगम बनाने में कारगर है। हमें भी इन्हें अपना कर जीवन शैली को सुगम बनाना चाहिए। परन्तु यह सरलता व सुगमता समाज के सर्वहारा वर्ग तक भी पहुंचनी चाहिए। जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं को पूर्ण करने लिए जिन संसाधनों की आवश्यकता है, वह समाज के हर वर्ग तक पहुंचना चाहिए। आज की सामाजिक व्यवस्था भौतिकवाद को बढ़ावा देती है। यह भौतिकवाद लोगों को अंधी दौड़ दौड़ने के लिए प्रेरित करता है। इस दौड़ में दौड़ने वाले लक्ष्य की ओर भागना चाहते हैं वह भी आंखों पर पट्टी बांधकर। आंखों मे बंधी पट्टी मदद करती है कि आप उन लोगों को न देख सके जो पिछड़े हैं व जीवन की मूलभूत जरूरतों को पूरा करने की व्यवस्था में रहते हैं। यह आखों की पट्टी इसमें भी मद्द करती है कि जब दौड़ लगाई जाए तो ये न देखा जाए की रास्ते में आपने किनको कुचला, किनारे लगाया या धक्का दिया। इस दौड़ में सभी अपनी–अपनी तरह से शामिल हैं।

अब सवाल यह है कि इस व्यवस्था पर प्रश्न कौन करें? क्या लक्ष्य का निर्धारण और दौड़ ही जीवन शैली है? यदि हाँ, तो इससे जुड़े सभी लाभ व हानि हमारे लिए हैं। जीवन शैली से जुड़ सभी व्याधियाँ जैसे कि डायबिटिज, थायरॉयड, ब्लड प्रेशर, कैंसर, आदि हमें स्वींकारनी चाहिए क्योंकि ये लक्ष्यों के पीछे की भागम भाग के परिणाम स्वरूप मिलती हैं। यदि इस सवाल का जवाब नहीं है तो हमें उत्तर ढूंढना होगा कि सही क्या है अंधी दौड़ या आंख खोल कर चलना। यदि हम जीवन शैली जनित समस्याओं का हल चाहते हैं तो हमें रूककर अपने आपसे ये प्रश्न करने ही होंगें और इनके उत्तर तलाशने होंगें। ज्यादातर शहरी व समृद्ध ग्रामीण व्यक्ति आज ऐसी जीवन शैली जी रहा है जिसमें उपभोग ज्यादा है व शारीरिक व्यायाम कम। और यदि वातानुकूलित व्यायाम शालाओं में जाते भी हैं तो उन्मुक्त खुली हवा की जगह ट्रेड मिल पर दौड़ लगाने को हम सही व्यायाम समझते हैं। इस तरह की जीवन शैली से बीमारियों ज्यादा और स्वास्थ्य कम ही होना है।

इसी प्रकार गृहणियों व बच्चों में भी शारीरिक परिश्रम करने की क्षमता में लगातार कमी पाई जा रही है। सामाजिक गोष्ठियों, चौपालों व सांझे चूल्हे की जगह टीवी, सिनेमा, पार्टियों ने ले ली है जहां पर मानसिक तनाव के सिवा कुछ भी नहीं हैं। बच्चे भी आजकल मोटापे के शिकार होते जा रहे हैं वैसे सारी समस्याएं सिर्फ शारीरिक व्यायाम से ही नहीं जुड़ी हैं। हम अपने आस पास ऐसे बहुत से लोगों को पाते हैं जो बहुत सारी कसरत करने के बावजूद भी हदय रोग व अन्य रोगों से ग्रसित है। इसका अर्थ यह है कि जीवन शैली से जुड़ा मानसिक तनाव हमारी समस्याओं की जड़ है।

मानसिक तनाव को हमने स्वाभाविक व प्राकृतिक मान लिया है। छोटा–बड़ा हर व्यक्ति तनाव से ग्रसित है और सभी यह मानते हैं कि तनाव में रहना तो स्वाभाविक है। जबकि सत्य यह है कि तनाव अस्वाभाविक मनःस्थिति है। यदि कोई तनाव में है इसका अर्थ है कि वह अपनी सामान्य स्थिति से परे है। यही कारण है तनाव प्रबंधन पर लिखी गई किताबें व शिक्षा आज बहुत ज्यादा प्रचलित है। क्या तनाव प्रबंधन की आवश्यकता है या तनाव उन्मूलन की? आवश्यकता है अपने मूलभूत व्यवहार व जीवन शैली अपनाने की, आवश्यकता है अपनी जीवन शैली के प्रंबधन की ।

डेल कारनेगी जिनकी किताब ''चिन्ता छोड़ो और जियो'' बहुत विख्यात हुई, खुद अवसाद के शिकार हुए। तनाव किताबें पढ़कर नहीं वरन जीवन शैली में बदलाव लाकर ही दूर किया जा सकता है। आवश्यकता है कि हम अपने जीवन की प्राथमिताओं का सही निर्धारण करें एवं भौतिक सुख की जगह आत्मिक सुख की राह पर चलें। एक स्वस्थ व समृद्ध समाज का निर्माण तभी हो सकता है जब हम समभाव व सद्भाव की जीवन शैली का निर्वाह करें।

**प्रीति बाँझल**
निदेशक (एन.जी.एस.)

# दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र द्वारा हिंदी पखवाड़े का आयोजन

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में दिनांक 15 से 29 सितंबर, 2015 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ 15.9.2015 को प्रातः 11:30 बजे वरिष्ठ उप महानिदेशक श्री अजय कुमार मित्तल द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। इस अवसर पर सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को श्री मित्तल द्वारा माननीय गृहमंत्री श्री राजनाथ सिंह का संदेश पढ़कर सुनाया गया।

पखवाड़े के दौरान कुल 10 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया।

पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह दिनांक 29–09–2015 को श्री ए.के. दास, उप महानिदेशक (एन. आर.) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सभी विजेताओं को पुरस्कार राशि एवं प्रशस्ति पत्र दिये गए। इस मौके पर उन्होंने सभी अधिकारियों/कर्मचारियों को हिंदी भाषा में अधिक से अधिक कामकाज और पत्राचार करने का आह्वान किया । अंत में श्री सुनील पुरोहित, उप महानिदेशक (एन.जी.एस.) द्वारा सभी को धन्यवाद देते हुए पखवाड़े का समापन किया गया ।

| क्र. सं. | प्रतियोगिताओं के नाम | प्राप्त स्थान | पुरस्कार विजेताओं के नाम |
|---|---|---|---|
| 1 | श्रुतलेख | प्रथम पुरस्कार | श्री राम संवार |
| 2 | | द्वितीय पुरस्कार | श्री चितरंजन कुमार |
| 3 | | तृतीय पुरस्कार | श्री कल्प नाथ साह |
| 4 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री सभाजीत मिश्र |
| 5 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री नागेंद्र लाल कर्ण |
| 6 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री ईश्वर सिंह |
| 7 | निबंध लेखन (राजपत्रित अधिकारियों के लिए) | प्रथम पुरस्कार | श्री हर्ष शर्मा |
| 8 | | द्वितीय पुरस्कार | श्री अवधेश सिंह |
| 9 | | तृतीय पुरस्कार | श्री प्रभास नंदन सहाय |
| 10 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री राजेश त्रिपाठी |
| 11 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री राम अवतार |
| 12 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री केतन कुमार मेहता |
| 13 | निबंध लेखन (अराजपत्रित कर्मचारियों के लिए) | प्रथम पुरस्कार | श्री अमर दीप |
| 14 | | द्वितीय पुरस्कार | श्री राजेश कुमार मीना |
| 15 | | तृतीय पुरस्कार | श्री शिव चरण |
| 16 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री अनसार |
| 17 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री राजेश कुमार |
| 18 | | सांत्वना पुरस्कार | श्रीमती राजकुमारी |

| क्र. सं. | प्रतियोगिताओं के नाम | प्राप्त स्थान | पुरस्कार विजेताओं के नाम |
|---|---|---|---|
| 19 | हिंदी टिप्पणी / मसौदा लेखन | प्रथम पुरस्कार | श्री रोहित गुप्ता |
| 20 | | द्वितीय पुरस्कार | श्री अमर दीप |
| 21 | | तृतीय पुरस्कार | श्री अवधेश सिंह |
| 22 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री किशन पाल सिंह |
| 23 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री शशि शेखर पांडेय |
| 24 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री प्रभास नंदन सहाय |
| 25 | अनुवाद | प्रथम पुरस्कार | श्री रोहित गुप्ता |
| 26 | | द्वितीय पुरस्कार | श्री शशि शेखर पांडेय |
| 27 | | तृतीय पुरस्कार | सुश्री दिव्या शर्मा |
| 28 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री प्रभास नंदन सहाय |
| 29 | | सांत्वना पुरस्कार | श्रीमती कमला परगई |
| 30 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री राजकुमार |
| 31 | हिंदी व्याकरण ज्ञान | प्रथम पुरस्कार | श्री राजेश त्रिपाठी |
| 32 | | द्वितीय पुरस्कार | श्री मनीष रंजन |
| 33 | | तृतीय पुरस्कार | श्री हर्ष शर्मा |
| 34 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री शशि शेखर पांडेय |
| 35 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री अमर दीप |
| 36 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री राजकुमार |
| 37 | अंताक्षरी | प्रथम पुरस्कार | श्री शिव चरण |
| 38 | | प्रथम पुरस्कार | श्री सभाजीत मित्र |
| 39 | | द्वितीय पुरस्कार | श्री चितरंजन कुमार |
| 40 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री पृथी सिंह |
| 41 | | सांत्वना पुरस्कार | श्रीमती उषा कुमारी |
| 42 | | सांत्वना पुरस्कार | श्रीमती नूपुर शर्मा |
| 43 | स्वचरित मौलिक कविता लेखन | प्रथम पुरस्कार | श्री मनीष रंजन |
| 44 | | द्वितीय पुरस्कार | श्री राजेश कुमार |
| 45 | | तृतीय पुरस्कार | श्री राजेश मीना |
| 46 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री राम अवतार |
| 47 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री चितरंजन कुमार |
| 48 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री केतन कुमार मेहता |
| 49 | हिंदी में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए | प्रथम पुरस्कार | श्री हर्ष शर्मा |
| 50 | | द्वितीय पुरस्कार | श्रीमती सुषमा चोपड़ा |
| 51 | | तृतीय पुरस्कार | श्री राजकुमार |
| 52 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री राजेश त्रिपाठी |
| 53 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री किशन पाल सिंह |
| 54 | | सांत्वना पुरस्कार | श्री राजेश कुमार |

# बधाईयां

## हिन्दी पखवाड़ा 2015

# बधाईयां

## हिन्दी पखवाड़ा 2015

एक झलक

# हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताएं

एक झलक

# हिन्दी कार्यशालाएं

## क्षेत्रीय दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र (पश्चिमी क्षेत्र) मुंबई

प्रतिवर्ष की तरह, दिनांक 14 सितंबर से 29 सितंबर, 2015 तक दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र (पश्चिमी क्षेत्र) मुंबई में हिंदी पखवाड़ा मनाया गया । इस दौरान हिंदी भाषा को प्रोत्साहन देने हेतु निम्नलिखित प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया : –

(क) सामान्य ज्ञान (ख) शुद्धलेखन प्रतियोगिता (ग) अंताक्षरी प्रतियोगिता

(घ) निबंध प्रतियोगिता (ड़) समानार्थी शब्द प्रतियोगिता (च) कथावाचन/काव्यवाचन

पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया । प्रतियोगिताओं के विजेताओं का विवरण इस प्रकार है :

| प्रतियोगिता का नाम | प्रथम पुरस्कार | द्वितीय पुरस्कार | तृतीय पुरस्कार |
|---|---|---|---|
| सामान्य ज्ञान | स्वप्नाली जगताप | एस. गोपालकृष्णन | कल्पना चिंतल |
| शुद्धलेखन प्रतियोगिता | ज्योति खरे | स्वप्नाली जगताप | संतोष निंबालकर |
| अंताक्षरी प्रतियोगिता (ग्रुप अ) | श्रद्धा तुलसणकर | ज्योति खरे | दलपत जोगडिया |
| अंताक्षरी प्रतियोगिता (ग्रुप ब) | सुमन नाईक | एस. गोपालकृष्णन | कल्पना चिंतल |
| निबंध प्रतियोगिता | एस. गोपालकृष्णन | ज्योति खरे | स्वप्नाली जगताप |
| समानार्थी शब्द प्रतियोगिता | स्वप्नाली जगताप | ज्योति खरे | एस. गोपालकृष्णन |

पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह 29/09/2015 को किया गया । इस समारोह में श्रीमती एस. ए. गोखले, हिंदी अधिकारी (डबल्यू.टी.पी.) को मुख्य अतिथि आमंत्रित किया गया । हिंदी पखवाड़े के कार्यक्रमों में श्री अमित राणे, टी.ओ.ए.(जी) टी.ई.सी. का योगदान अत्यंत सराहनीय रहा । विजेताओं और प्रतिभागिओं को हिंदी के प्रति उत्साहित करने के आशय से हिंदी पुस्तकें पुरस्कार के रूप में दी गई । श्रीमती एस. ए. गोखले, हिंदी अधिकारी (डबल्यू.टी.पी.) एवं श्री अमित राणे, टी.ओ.ए.(जी) टी.ई.सी. को भी हिंदी पखवाड़ा आयोजित करने में उनकी सेवाओं के लिए हिंदी पुस्तकें प्रदान की गई । पखवाड़े के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं की उप महानिदेशक (प.क्षे.) ने सराहना की । इस मौके पर उन्होंने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी भाषा में अधिक से अधिक कामकाज और पत्राचार करने की सलाह दी ।

# राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान
# अल्ट परिसर, गाजियाबाद

## 1. संस्थान की गतिविधियां :

क. आईटीएस बैच 2013 और 2014 एवं पी एण्ड टी भवन निर्माण सेवा (बीडबल्यूएस–सिविल) बैच 2014 के परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ख. 2013 एवं 2014 बैच के कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारियों (जेटीओ) के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

ग. दूरसंचार विभाग के अधिकारियों के लिए दूरसंचार एवं आईसीटी से जुड़ी मोबाइल प्रौद्योगिकीओं, ट्रांसमिशन प्रौद्योगिकीओं, स्वीचिंग प्रौद्योगिकीओं–एनजीएन, डाटा संचार प्रौद्योगिकीओं, पॉलिसी – लाइसेंसिंग आदि विषयों तथा सतर्कता जागरूकता एवं सूचना का अधिकार के सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम।

घ. दूरसंचार एवं आईसीटी पर अन्य सरकारी विभागों, सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों, खुफिया एजेंसियों और कानून प्रवर्तन एजेंसियों के लिए विशिष्ट कार्यक्रम।

**2. प्रशिक्षण कार्यक्रम :** संस्थान द्वारा निम्नलिखित प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :

| क्र.सं | कार्यक्रम | आयोजित कार्यक्रमों की संख्या | प्रशिक्षुओं की संख्या | प्रशिक्षु दिवसों की संख्या |
|---|---|---|---|---|
| 1 | आईटीएस/बीडबल्यूएस परिवीक्षाधीन अधिकारियों के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम | 35 | 14 (2013 बैच)<br>18 (2014 बैच) | 1789 |
| 2 | कनिष्ठ दूरसंचार अधिकारियों (जेटीओ) के लिए इंडक्शन प्रशिक्षण कार्यक्रम | 10 | 9 (2013 बैच)<br>8 (2014 बैच) | 1404 |
| 3 | दूरसंचार विभाग के अधिकारियों के लिए सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम | 7 | 63 | 117 |
| 4 | कार्यशालाएं /संगोष्ठियाँ | 4 | 190 | 247 |
| 5 | अन्य सरकारी विभागों/एजेंसियों के लिए कार्यक्रम | 2 | 23 | 46 |
| 6 | कुल संख्या | 58 | 325 | 3603 |

**3. नीति शोधः** संस्थान द्वारा 'नीति शोध के लिए एक परिप्रेक्ष्य योजना' तैयार की गई तथा दूरसंचार मुख्यालय को भेजी गई । दूरसंचार क्षेत्र में आनुभविक रिसर्च के क्षेत्र में अंतर विश्लेषण, प्रभावी विश्लेषण और पॉलिसी नियमन इनपुट आदि पर नीति शोध कार्य शुरू करने का प्रस्ताव दिया ।

**4. भारतीय दूरसंचार सेवा और पी एंड टी भवन निर्माण सेवा के परिवीक्षाधीन अधिकारियों की माननीय राष्ट्रपति से मुलाकातः** भारतीय दूरसंचार सेवा और पी एंड टी भवन निर्माण सेवा के 2013 बैच के परिवीक्षाधीन अधिकारियों ने राष्ट्रपति भवन में भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी से दिनांक 09 मार्च, 2016 को मुलाकात की । श्री देबी प्रसाद डे, वरिष्ठ उप महानिदेशक

(टी.ई.सी./एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.) द्वारा माननीय राष्ट्रपति जी का गुल–दस्ता भेंट कर स्वागत किया गया ।

राष्ट्रपति महोदय ने इस अवसर पर बोलते हुए कहा कि उदारीकरण के युग में पोस्टल और दूरसंचार क्षेत्र में आंशिक निजीकरण के कारण प्रौद्योगिकी में भारी बदलाव हुए हैं और उपभोक्ताओं की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है । उन्होंने कहा कि इस युग में अस्तित्व के लिए तेजी से बदलती सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के साथ तालमेल रखना जरूरी है ।

**माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी के साथ 2013 बैच के आईटीएस/बीडबल्यूएस प्रशिक्षार्थी अधिकारी**

राष्ट्रपति महोदय ने कहा कि भारत में पिछले दो दशक के दौरान दूरसंचार क्रांति हुई है । भारत मोबाइल टेलीफोनी तथा तीव्रतर इंटरनेट नेटवर्क के कारण अपनी विशाल डिजिटल क्षमता के दोहन में सक्षम बन रहा है तथा एक तीव्र डिजिटल हब के रूप में भी उभर रहा है । उत्तम श्रेणी की दूरसंचार तथा इंटरनेट सेवाएँ समय की मांग है और शिक्षा के बढ़ते स्तर एवं सस्ती इंटरनेट और मोबाइल सेवाओं से इनकी मांग बढ़ना अपेक्षित है । उन्होंने आशा व्यक्त की, कि राष्ट्रीय दूरसंचार संस्थान, परिवीक्षाधीन अधिकारियों को दूरसंचार और बिल्डिंग वर्क्स के क्षेत्र में आगामी चुनौतियों का सामना करने में अपेक्षित तकनीकी और गैर–तकनीकी प्रशिक्षण प्रदान कर समर्थ बना रहा है । राष्ट्रपति महोदय ने परिवीक्षाधीन अधिकारियों को भारत के लोगों की महत्वाकाक्षांओं को पूरा करने के लिए अपनी दक्षता, पारदर्शिता और सत्यनिष्ठा से काम करने की सलाह दी । आईटीएस अधिकारी श्रीमती खुशबू शर्मा ने अपने ट्रेनिंग के दौरान हुए अनुभव साझा किए । श्री देबी प्रसाद डे, वरिष्ठ उप महानिदेशक ने स्मृति–चिन्ह भेंट कर माननीय राष्ट्रपति जी का आभार व्यक्त किया ।

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी जी का स्वागत

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी जी को स्मृति–चिन्ह भेंट

माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी द्वारा संबोधन

श्रीमती खुशबू शर्मा,स.म.अ.दू. अपने अनुभव साझा करते हुए

5. **2014 बैच के आईटीएस/बीडबल्यूएस प्रशिक्षार्थी अधिकारियों का माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री के साथ पारस्परिक विचार–विमर्श :** भारतीय दूरसंचार सेवा एवं पी एंड टी भवन निर्माण सेवा 2014 बैच के प्रशिक्षार्थी अधिकारियों का माननीय श्री रवि शंकर प्रसाद, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री के साथ पारस्परिक विचार–विमर्श कार्यक्रम 16 जनवरी, 2016 को संचार भवन, दूरसंचार विभाग नई दिल्ली में आयोजित हुआ ।

उक्त कार्यक्रम में श्री राकेश गर्ग, सचिव (दूरसंचार), श्री एन.के. यादव, सदस्य (सेवाएं) तथा दूरसंचार विभाग एवं राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान के वरिष्ठ अधिकारी मौजूद रहे ।

17 आईटीएस और 1 पी एंड टी बीडबल्यूएस प्रशिक्षार्थी अधिकारियों ने माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री को अपना परिचय दिया। अधिकतर परिवीक्षाधीन अधिकारियों ने बी.टेक की उपाधि प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कालेजों जैसे आईआईटी और एनआईटी से पास की ।

सचिव (दूरसंचार) ने अपने संबोधन में कहा कि प्रशिक्षार्थी अधिकारी बहुत प्रतिभाशाली हैं तथा इन्हें कठिन परिश्रम करने एवं ईमानदार रहने की सलाह दी ।

माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री जी द्वारा दूरसंचार विभाग में नियुक्ति पर प्रशिक्षार्थी अधिकारियों का स्वागत किया गया तथा विभाग को डिजिटल भारत और डिजिटल समावेशन की दिशा में ले जाने के बारे में अवगत करवाया ।

माननीय मंत्री जी ने बताया कि दूरसंचार क्षेत्र में प्रौद्योगिकी बहुत तेजी से बदल रही है । भारत में इंटरनेट का प्रयोग बहुत तेजी से बढ़ रहा है तथा विश्व स्तर पर इंटरनेट के प्रयोग में, चीन के बाद हम दूसरे स्थान पर है । भारत में मोबाइल उपभोक्ताओं की संख्या भी बढ़ रही है तथा तीव्र वृद्धि स्पष्ट दिख रही है । ऑप्टिकल फाइबर नेटवर्क 'भारतनेट' की स्थापना के बाद हमारा देश डिजिटलीकरण की दिशा में आगे बढ़ रहा है । 'भारतनेट' नेटवर्क भारत को डिजिटल भारत बनाने में मदद करेगा और अंततः सुशासन स्थापित करने की दिशा में आगे बढाएगा ।

माननीय मंत्री जी ने जोर देते हुए कहा कि भारत में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अवसर प्रदत संभावनाएं है जहां हम बहुत विकास कर सकते है । हमारे पास शोध क्षमता, नवप्रवर्तन और नये विचारों की क्षमता है। उन्होंने आगे बताया कि लक्ष्यों को निर्दिष्ट करने और प्राप्त करने में बीएसएनएल ने कठोर

**माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद जी के साथ 2014 बैच के आईटीएस/बीडबल्यूएस प्रशिक्षार्थी अधिकारी**

अभ्यास शुरू किया है जिसके फलस्वरूप वर्तमान में बीएसएनएल का परिचालन लाभ बढ़ रहा है और ग्राहक भी बढ़ रहें है ।

इसी प्रकार डाक विभाग भी नई और अभिनव सेवायें जैसे ई–कॉमर्स के द्वारा राजस्व को बढ़ावा देने का प्रयास कर रहा है ।

उन्होंने प्रशिक्षार्थी अधिकारियों को नई प्रौद्योगिकीओं को अपनाते हुए भारत की तस्वीर बदलने के लिए रोडमैप के बारे में सोचने और योजना बनाने के बारे में कहा । माननीय मंत्री जी ने प्रशिक्षार्थी अधिकारियों को भारत

माननीय संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्री श्री रविशंकर प्रसाद जी के साथ पारस्परिक विचार–विमर्श कार्यक्रम में 2014 बैच के आईटीएस/बीडबल्यूएस प्रशिक्षार्थी अधिकारी

के विकास के लिए सक्रिय उत्प्रेरक परिवर्तक बनने के लिए कहा । दूरसंचार क्षेत्र विकासात्मक क्षेत्र है जहां नवाचार सफलता की कुंजी है । उन्होंने प्रशिक्षार्थी अधिकारियों को दूरसंचार क्षेत्र में नई योजनाओं को लाने के लिए प्रेरित किया ।

माननीय मंत्री जी ने बताया कि भारतनेट द्वारा सृजित डिजिटल अवसंरचना के द्वारा हम छोटे शहरों और कस्बों में बीपीओ योजना को प्रसारित करने में सफल होंगें और इससे नौकरी के अवसर भी बढ़ेंगे । उन्होंने आगे बताया कि छोटे शहरों, कस्बों और गांवों में कॉल सेंटर के लिए 48000 सीटें संस्थापन की योजना है। इसके परिणामस्वरूप सभी के लिए डिजिटल समावेशन के अवसर उपलब्ध होंगें । ग्रामीण क्षेत्रों के कई गांवों में सुशासन सेवा के लिए कॉमन सर्विस सेंटर खोले गए हैं । माननीय मंत्री जी ने प्रशिक्षार्थी अधिकारियों को अच्छे और ईमानदार अफसर बनने की सलाह दी ।

**6. केपेसिटि बिल्डिंग सेमिनार और टी.ई.सी. में तत्कालीन सदस्य (प्रौद्योगिकी) द्वारा संबोधनः** संस्थान द्वारा 20 नवंबर, 2015 को भारत संचार भवन, नई दिल्ली में" मशीन से मशीन संचार" पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया । इस सेमिनार में तत्कालीन सदस्य (प्रौद्योगिकी) और सदस्य (वित्त) विशिष्ट अतिथि रहे तथा विभिन्न सरकारी विभागों, दूरसंचार विभाग तथा उद्योगों के लगभग 130 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। सेमिनार में दूरसंचार क्षेत्र में ओर अधिक स्वदेशी उपकरणों की आवश्यकता पर विचार–विमर्श किया गया । वक्ताओं द्वारा 'मशीन से मशीन संचार' को देशभर में कार्यान्वयन के लिए विभिन्न आवश्यकताओं पर व्यापक विचार–विमर्श किया गया । दिनांक 30 दिसम्बर, 2015 को स्व. श्री पीयूष अग्रवाल, तत्कालीन सदस्य (प्रौद्योगिकी) ने टी.ई.सी. में अधिकारियों को संबोधित किया।

श्रीमती ऍनी मोराईस, सदस्य (वित्त), स्व. श्री पीयूष अग्रवाल, तत्कालीन सदस्य (प्रौद्योगिकी) और अन्य अधिकारी ''मशीन से मशीन संचार'' पर चार तकनीकी रिपोर्ट जारी करते हुए

स्व. श्री पीयूष अग्रवाल, तत्कालीन सदस्य (प्रौद्योगिकी), टी.ई.सी. में अधिकारियों को संबोधित करते हुए।

## 7. सदस्य (सेवाएं) द्वारा परिवीक्षा अधिकारियों को सम्बोधनः–

दिनांक 30–12–2015 को दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र में एक विचार विमर्श कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें श्री एन. के. यादव सदस्य (सेवाएं), दूरसंचार आयोग द्वारा भारतीय दूरसंचार सेवा एवं पी एंड टी बीडबल्यूएस 2013 बैच के ग्रुप 'क' परिवीक्षा अधिकारियों को संबोधित किया गया । इस कार्यक्रम में टीईसी के वरिष्ठ उप महानिदेशक एवं एनटीआईपीआरआईटी/टीईसी के सभी उप महानिदेशक उपस्थित थे।

सदस्य (सेवाएं) ने प्रशिक्षुओं के कैरियर की संभावनाओं के बारे में चर्चा की और उन्हें व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने पर जोर दिया। उन्होंने अधिकारियों को फील्ड वर्क का अनुभव लेने हेतु दूरसंचार विभाग के सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में काम करने के लिए भी प्रेरित किया ।

**श्री ए.के.दास, तत्कालीन वरिष्ठ उप महानिदेशक, टीईसी श्री एन.के. यादव, सदस्य (सेवाएं) का स्वागत करते हुए**

## 8. हिन्दी पखवाड़ा एवं कार्यशाला :

1. संस्थान में 15 सितंबर 2015 से 29 सितंबर 2015 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया । पखवाड़े के दौरान कुल 5 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । समापन समारोह में विजेताओं को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र दिये गए ।
2. दिनांक 28/09/2015 को संस्थान में हिन्दी कार्यशाला–2015 का आयोजन किया गया ।
3. उत्तर–पूर्वी राज्यों में संचार सुविधाओं का अध्ययन करने के लिए आईटीएस–2013 बैच के प्रशिक्षार्थियों ने एक सप्ताह की अध्ययन यात्रा की ।

**9. अन्य गतिविधियां :** संस्थान में 02 मार्च, 2016 को सांस्कृतिक प्रोग्राम का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया गया ।

झलकियाँ

## एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी. में आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम

दूरसंचार विभाग
एवं
प्रशिक्षण संस्थान
गाजियाबाद

# हिंदी पखवाड़ा 2015

## समापन

दूरसंचार विभाग

# दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली – 110001

वेबसाईट : www.tec.gov.in

## क्षेत्रीय कार्यालयः

### पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

प्रथम तल, दूरसंचार क्यूए बिल्डिंग, ईपी एण्ड जीपी ब्लॉक,
सॉल्ट लेक, सेक्टर 5, कोलकाता–700091

### पश्चिमी क्षेत्र, मुम्बई

द्वितीय तल, डी विंग, बीएसएनएल प्रशासनिक भवन,
जुहू रोड़, शान्ता क्रूज (वेस्ट) मुम्बई–400054

### दक्षिणी क्षेत्र, बेंगलूरू

द्वितीय मंजिल, जया नगर टेलीफोन एक्सचेंज,
9 वां मेन, चौथा ब्लॉक, जयानगर, बेंगलूरू–560011

### उत्तरी क्षेत्र, नई दिल्ली

खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली–110001

Designed & Printed By ROYAL PRESS # 9310132888